A Monthly Book of Self Progress Churning Points

From Baba's Everyday Murlis

August 2014

In Remembrance of our most beloved Baba

-Atma Bhai

a.brahmin.soul@gmail.com

आज की मुरली पर सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 01-08-14

हम स्टुडेन्ट आत्माओं को देवी-देवता बनाने की पढ़ाई पढ़ाने वाले, बेहद के टीचर, परमपिता-परमात्मा बाप ने हम बच्चों को एटेन्सन दिलाते हुए कहा, मीठे बच्चे - तुम यहॉ पढ़ाई पढ़ने के लिए आये हो, तुम्हें आंख बन्द करने की दरकार नहीं, पढ़ाई आंख खोलकर पढ़ी जाती हैं.

इस संपूर्ण तमोप्रधान, कलयुगी दुनिया में रहते कई ब्राह्मण आत्माओं को सारे दिन में कई बातों का सामना करना पड़ता हैं, इसके कारण न चाहते भी व्यर्थ काफी चलता हैं. इसके कारण मन शांत न होने के कारण रात को नींद भी ठीक से कर नहीं पाते और फिर दूसरे दिन जब सेन्टर पर जाकर मुरली सुनते हैं तो मीठे बाबा के मधुर महावाक्य सुनते, मन शांत हो जाता हैं और इसके कारण वह मुरली सुनते-सुनते कभी-कभी नींद में चले जाते हैं. अगर आपके साथ ऐसा हो रहा हैं, तो इसका एक उपाय हैं ट्रैफिक कंट्रोल. सारे दिन में जभी बिचमे टाइम मिले तो 1-2 मिनिट के लिए मन को शांत करने ट्रैफिक कंट्रोल के सोंग्स युज कर बाबा से योग करो, जिसे मन शांत हो जाये. दूसरा सोने से पहले 10 मिनिट बाबा से योग करो. बाबा को सारे दिन का पोता-मेल देकर सोने की प्रैक्टिस करो. इससे रात को नींद अच्छी आयेंगी और फिर दूसरे दिन मुरली भी फ्रेश होकर सून पायेंगे.

कई बहुत पुराने ब्राह्मण आत्माये भी मुरली के समय नींद की झपकी खाते रहते हैं, उसका मुख्य कारण, उन्हें बाबा के ज्ञान में कुछ भी नया नहीं लगता हैं.

बाबा की मुरली तो हम ब्राह्मण आत्माओं के लिए बाबा से मिला जीयदान हैं. बाबा की मुरली हम गोप-गोपीओं को अतीन्द्रिय सुख प्राप्त कराती हैं.

तो हर रोज हमें मुरली कैसे सुननी चाहिए?

- मुरली शुरू होने से पहले सेन्टर पर जाकर 10-15 मिनिट बाबा के कमरे में योग करना चाहिए. जिसे हमारी आत्मिक स्थिति बने.

- मुरली सुनते समय स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित कर सामने मुरली पढ़ने वाले को न देख, बाबा हमें डायरेक्टर मुरली सूना रहे हैं ऐसी अवस्था में मुरली सुननी चाहिए. (मुरली सुनाने वालों को भी ये स्वयं भगवान के महावाक्य हैं, में आत्मा इस महावाक्य को पढ़ने के लिए निमित हूँ. ऐसा समझकर मुरली सुनानी चाहिए.)

- मुरली सुनते समय, हमारी एकाग्रता की शक्ति को युज कर, अन्तरमुखी अवस्था में रहकर स्वयं भगवान मेरे लिए ही कह रहे हैं तो मुरली के हर वाक्य को खुद में समाते, स्वयं को चेक करते चलेंगे तो मुरली हमें याद भी रहेगी और मुरली के महावाक्य को धारण भी आत्मा कर पायेंगी.

- मुरली सुनने के लिए हमारी बैठक हो सके तो हर रोज सेम रखे.

इस तरह से मुरली सुनने से हर रोज बाबा की मुरली से हमें नये-नये अच्छे अनुभव भी होंगे और मुरली सुनने का उमंग-उत्साह भी बना रहेगा और ज्ञान की धारणा भी होती जायेगी.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ --------- Date: 02-08-14

आज ज्ञान सागर बाप ने हमें देही-अभिमानी और देह-अभिमानी के बीच में क्या अन्तर हैं उसको स्पष्ट करते हुए कहा, मीठे बच्चे - विनाशी शरीरों से प्यार न करके अविनाशी बाप से प्यार करो तो रोने से छूट जायेंगे.

बाबा ने आज सारी मुरली में जितनी बार देही-अभिमानी और देह-अभिमानी के अन्तर को अलग-अलग तरीके से स्पष्ट किया हैं, उसे ही लिखकर या इसको ही बार-बार पढ़कर हमारी देही-अभिमानी स्थिति बनाने का सहज पुरुषार्थ करेंगे.

पहले है देही-अभिमानी की पाईन्ट और बाद में है देह-अभिमानी की पाईन्ट.

- यह तो बच्चे ही जानते है कि आत्मा अविनाशी है और बाप भी अविनाशी है. जब कि सारी दुनिया विनाशी है, इस दुनिया कि हर एक चीज विनाशी है, यह शरीर भी विनाशी है.

- अविनाशी आत्मा का अविनाशी आत्मा से प्यार होना चाहिए, इसे ही राइटियस प्यार कहते हैं. अविनाशी आत्मा का विनाशी शरीर से मोह रखना अनराइटियस प्यार है.

- अभी तुम अपने को अविनाशी आत्मा समझते हो तो रोने की बात नहीं क्योंकि आत्म-अभिमानी हैं. बाप अब तुम बच्चों को आत्म-अभिमानी बनाते है. देह-अभिमानी होने से रोना होता है. विनाशी शरीर के पिछाड़ी रोते है.

- बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो. तुम अविनाशी बाप के बच्चे अविनाशी आत्मा हो, तुमको रोने की दरकार नहीं. आत्मा एक शरीर छोड़ जाए दूसरा पार्ट बजाती है. ये तो खेल है. तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो.

- देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ो. अपने को अविनाशी आत्मा समझो. आत्मा कभी मरती नहीं. गायन भी है जो रोया सो खोया.

- आत्मा-अभिमानी बनने से ही लायक बन जायेंगे. तो बाप आकर देह-अभिमानी से आत्मा-अभिमानी बनाते हैं. बाप कहते है तुम कैसे भूले हुए हो. जन्म-जन्मांतर (लास्ट 63 जन्म) तुमको देह-अभिमान के कारण रोना पड़ा है.

- वह है हँसने की दुनिया, यह है रोने वाली दुनिया.

- वह है सुख की दुनिया, यह है दुख की दुनिया.

- अविनाशी बाप की अविनाशी बच्चों को शिक्षा मिलती है. वह देह-अभिमानी हैं तो देह को ही देख शिक्षा देते हैं. तो देह की याद आने से रोते हैं. देखते भी हैं शरीर खत्म हो गया फिर उनको याद करने से क्या फायदा. मिट्टी को याद किया जाता है क्या?

- अभी तुम अपने को आत्मा समझ, दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो जरा भी दुख नहीं होता. आत्मा जब दूसरे के शरीर समझ उसे मोह रखती है तो दुखी होती हैं.

- सतयुग है फस्टकलास तो सब चीज़ें फस्टक्लास मिलती है. कलियुग में हे सब चीज़ें थर्डक्लास.

- अभी तुम आत्मा-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस कर बाप की श्रीमत् से स्वर्ग (सतयुग-त्रेता) के मालिक बनते हो. आधाकल्प तुमने देह-अभिमानी रहकर रावण की मत पर चलने से तुम्हारी क्या हालत होती है.

- ईश्वरीय लॉटरी और असुरी लॉटरी में कितना फर्क होता हैं. ॐ शांति.

आज की अव्यक्त मुरली का सार ---------- Date: 03-08-14

सर्व शक्तिओ के खजानों की चाबी है - एकनामी बनना.

बापदादा हमें कैसा देखते हैं?

बापदादा सदा बच्चों की तकदीर को देख हर्षित होते हैं. वाह तक़दीर वाह. ऐसी श्रेष्ठ तक़दीर जो बाप को भी अपने स्नेह सम्बन्ध से निराकार से साकार बना लेते. आवाज से परे बाप को आवाज में लाते. स्वयं भगवान को जैसा चाहे वैसे स्वरूप में लाकर मालिक से सेवाधारी बना लेते. बाप के सर्व खजानों के अधिकारी बनने की वा बाप को स्वयं पर समर्पण कराने की चाबी बच्चों के हाथ में हैं, जिस चाबी द्वारा जो चाहे एक सेकेण्ड में प्राप्त कर सकते हो. जब रचयिता ही सेवाधारी बन गए तो सर्व रचना आप श्रेष्ठ आत्माओं के आगे सेवा के लिए बाँधी हुई हैं.

अभी हम स्वयं में चेक करें -

बापदादा ने आगे कहा -- ऐसी चाबी को सम्भालने वाले नॉलेजफुल और सेन्सीबुल बने हो?

आप ईश्वरीय सन्तान मास्टर रचयिता, मास्टर सर्वशक्तिमान के आगे यह प्रकृति और परिस्थिति को दासी बनाई है?

अपने साइलेन्स की शक्ति को अच्छी तरह से जानते हो? या बहुत शक्तियों मिलने के कारण उनके महत्व को भूल जाते हो?

परमात्म शक्ति को अपना बना सकते, रूप परिवर्तन करा सकते हो तो प्रकृति और परिस्थिति का रूप और गुण परिवर्तन नहीं कर सकते हो?

तमोगुणी प्रकृति को स्वयं की सतोगुणी स्थिति से परिवर्तन कर सके या परिस्थिति पर स्व शक्ति से विजय पा सके ऐसे मास्टर रचता शक्तिशाली बने हो?

क्या हैं चाबी की विशेषतायें और इसे युज करने का तरीका?

बापदादा ने हर बच्चे की रीसैप्शन में बच्चों को स्वयं की और खजानों की चाबी आने से ही दे दी है.

- ऐसे जादू की चाबी जिससे जिस शक्ति का आह्वान करो उस शक्ति का स्वरूप बन सकते हो.

- एक सेकेण्ड में इस जादू की चाबी द्वारा जिस लोक में जाने चाहो, उस लोक के वासी बन सकते हो.

- जिस काल को जानने चाहो उस काल को जानने वाले रुहानी ज्योतिषी बन सकते हो.

- संकल्प शक्ति को जिस रफ्तार से जिस मार्ग पर ले जाना चाहो उसी रीति से संकल्प शक्ति के अधिकारी बन सकते हो.

एकनामी बनना ही चाबी को लगाने का तरीका है. चाबी लगाओ और खजाना लो.

कोई भी कर्म करने से पहले जैसा कर्म वैसी शक्ति का आवाहन इस चाबी द्वारा करो - तो हर शक्ति आप मास्टर रचता की सेवाधारी बन सेवा करेगी. शक्ति का आवाहन करो अर्थात मालिक बन आर्डर करो. यह शक्तियों आपकी भुजायें समान हैं, आपकी भुजायें आपके आर्डर के बिना कुछ नहीं कर सकती हैं. जैसे की आर्डर करो सहनशक्ति कार्य सफल करो तो देखो सफलता सदा हुई पड़ी है.

अन्त में बापदादा ने कहा ऐसे श्रेष्ठ तक़दीरवान रुहानी शक्ति स्वरूप मास्टर रचता, प्रकृति और परिस्थितियों को अधिकार से विजय पाने वाले, सदा विजयी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते. ऐसा बनाने वाले बापदादा को हम बच्चों का भी यादप्यार और नमस्ते.

शुक्रिया बापदादा आपका लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 04-08-14

योगेश्वर बाप ने हम बच्चों को योग का महत्व को समझाते हुए कहा, मीठे बच्चे - तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना आत्मा में लाइट आयेगी, ज्ञानवान आत्मा चमकीली बन जाती हैं.

बाबा हमें हर मुरली में एक बात जरूर हमसे कहते है, बच्चे अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे सब विकर्म विनाश हो जायेंगे और आत्मा पावन (पवित्र) बन जायेंगी और पवित्र आत्मा ही पवित्र दुनिया की मालिक बनेगी.

आज बाबा ने योग से आत्मा कैसे पवित्र बनती है और हम अपने में चेक भी करें की हमारा योग ठीक हो रहा है या नहीं उसे स्पष्ट समझाया हैं.

बाबा के साथ अच्छा योग हो उसके लिए नीचे दिये हुए स्टैप को फोलो करों.

- सर्वप्रथम खुद को आत्मा समझ ने के लिए एकाग्रता की शक्ति को युज कर, हमारी दिव्य-चक्षु से खुद को आत्मा देखो और सभी संकल्प मर्ज कर दो.

इसके लिए कुछ स्वमानो को अपनी मनन शक्ति से युज करो. यह स्वमान हमें आत्मिक स्थिति बनाने में मदद करेंगे.

में शांत और पवित्र आत्मा हूँ.

में भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.

- जब हमारी स्थिति आत्मिक बन जाती है, तब हमें अपनी दिव्य बुद्धि को युज कर परमधाम में हमारे प्राण-प्यारे परमपिता को याद करना हैं.

जैसे ही हमारा कनेक्शन बाबा से जुटता है, बाबा से लाइट और माईट (प्रकाश और शक्ति) की किरणें हमारी आत्मा में आना शुरू हो जाती हैं.

इसके लिए नीचे दिये हुए स्वमान को युज कर सकते हैं.

में आत्मा, शांति के सागर का बच्चा, शांत स्वरूप हूँ. - इसे शांति की शक्ति हमारी आत्मा में भर सकते हैं.

में आत्मा, पवित्रता के सागर का बच्चा, संपूर्ण पवित्र स्वरूप हूँ. -- इसे पवित्रता की शक्ति हमारी आत्मा में भर सकते हैं.

में आत्मा, सर्व-शक्तिवान का बच्चा, मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ. -- इसे अष्ट शक्तियां हमारे में भर सकते हैं.

सफल योग की चैकिंग ---

- बाबा से योग के बाद हमारी सर्व कर्मेन्द्रियॉ शांत और शीतल हो जाती हैं. कर्मेन्द्रियों की चंचलता कम होती जाती हैं.

- बाबा से योग के बाद हमारी आत्मा में शक्ति आती है, जिसे हम सभी धारणाओं को सरल रूप से पालन कर सकते हैं. एक उदाहरण के रुप में अगर हमें कोई हर रोज ओफिस में तंग करता है, तो अब हम उस पर गुस्सा न हो कर, जब वह आत्मा हमें कुछ कहेगी तो हमारी सहनशक्ति को युज कर उसे तुरंत माफ कर देंगे और उसके प्रति रहम-भाव रखेंगे तो वह आत्मा भी हमसे अच्छा व्यवहार करेंगी. यह श्रेष्ठ परिवर्तन बाबा के साथ हमारा योग का ही परिणाम हैं.

जितना हमारा पतित-पावन बाप से हमारा योग अच्छा होगा, उतना हमारे में आत्मा के ओरिजिनल गुण, शांति, सुख, आनंद और प्रेम इमर्ज रुप में होंगे तो हमारे सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली आत्माओं को भी हम वही देंगे. हमारे घर का, ऑफिस का वायुमण्डल ही बदल जायेगा. हमारा मन हमेशा खुश रहेगा.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 05-08-14

विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति और हम बच्चों को जीवन-मुक्ति में ले जाने वाले बेहद के सतगुरु - बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हें खुशी होनी चाहिए कि दुख हरने वाला बाबा हमें सुखधाम में ले जाने आया है, हम स्वर्ग के परीज़ादे बनने वाले हैं.

बाबा ने आज एक बात बार-बार कही कि बाबा सब आत्माओं को वापस घर ले जायेंगे, बाकी अभी थोड़ा समय है, जितना हो सके पुरुषार्थ कर बाप को याद कर अपने जन्म-जन्मांतर के पापों को खलास करो, नहीं तो सजायें खाकर भी पावन बनना पड़ेगा. इसे पद भी कम हो जायेगा. समय के पहले स्व को संपूर्ण बनाओ.

बाबा ने कही बात को ही हम फिरसे ऐसे रिपिट करेंगे, जिसे हमें बाप की याद भी रहे और बाप की कही बात भी याद रहें.

- मीठे ते मीठा बेहद का बाप हमें दुखधाम से निकाल सुखधाम में ले जाने वाला हैं. बाप ही टीचर बनकर हमें सारी सृष्टि का राज समझाते हैं. यह चक्र कैसे फिरता है, 84 जन्म कैसे पास होते हैं - यह सारा चपटी में समझाते हैं. फिर सतगुरु बन कर साथ भी ले जायेंगे. यहाँ तो रहना नहीं है. सभी आत्माओं को साथ ले जायेंगे. बाकी थोड़े रोज हैं. इसलिए जल्दी-जल्दी मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मांतर का पापों का बोझा है, वह खलास हो. माया कितने भी संकल्प, विकल्प के तूफ़ान लाये, लेकिन बहादुर बन, जीवन के अन्तिम श्वास तक बाप को याद करना ही हैं.

- बाप आये ही है घर ले चलने के लिए सब आत्माओं को. तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना तुम पवित्र बनते जायेंगे. पूरा पवित्र बन जायेंगे तो सजायें नहीं खानी पड़ेगी और स्वर्ग में पद भी ऊँच प्राप्त होगा.

- बाप कहते है - तुम सब सितायें हो. मैं हूँ राम. सब भक्तों का सद्गति दांता मैं हूँ. बाबा तुम सब बच्चों की सद्गति कर देते हैं. बाकी सब आत्माये मुक्तिधाम में चली जायेंगी.

- बाबा कहते है - मैं तो कभी साँवरा नहीं बनता हूँ. तुम साँवरे से सुन्दर बनते हो. सदा सुन्दर तो एक ही मुसाफिर हैं. तुम सबको सुन्दर बनाकर साथ में ले जाते हैं. तुम बच्चों को सुन्दर बन फिर औरो को भी सुन्दर बनाना हैं.

जिसके लिए हम भक्ति में बार-बार पुकारते थे - हे पतित-पावन आओ, हमें इस नर्क से निकालो. वही शिवबाबा ने आकर हमें ज्ञान दिया की हम आत्माये कैसे उनकी याद से पावन बन सकती है और हम पावन आत्माओं को वही मुक्तेश्वर बाप अपने नैनों पर बैठाकर साथ ले जायेंगे. तो हमें इस शरीर छोड़ ने का भय अभी नहीं है, क्योंकि जब हम अपना शरीर छोड़ेंगे तो हमें मालूम है कि हमारा स्वागत करने वाला बाबा हैं. बाबा हमें अपनी गोदीं में उठा लेगा. कितने भाग्यशाली आत्माये है हम.

अन्तिम पुरुषार्थ सदा याद रहे की - बाबा के साथ घर जाना है, फिर श्रीकृष्ण के साथ सतयुग में आना हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:06-08-14

ज्ञान सागर बाप ने आज हम बच्चों को बार-बार नशा चढ़ाते हुए कहा, अब तुम सतयुग में देवी-देवता बनने वाले हो, बाबा तुम्हें सारे विश्व का मालिक बनाते है. तो इस पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल कर, बाबा के साथ विश्व सेवा में लग जाना हैं. विश्व सेवा के लायक बनने के लिए इस ईश्वरीय पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना हैं. इस पढ़ाई को अच्छी तरह पढ़कर, दूसरों को भी पढ़ाना है तभी स्वर्ग में उंच पद प्राप्त कर सकेंगे.

बाबा ने सारी मुरली में जितनी बार हमें ईश्वरीय पढ़ाई के लिए अलग-अलग तरीक़े से प्रोत्साहित किया उसे ही फिरसे रिपिट करेंगे जिसे हमारी आत्मा में बाबा की याद और ईश्वरीय पढ़ाई छप जायें.

- रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए. पढ़ती तो आत्मा है ना. आत्मा संस्कार ले जाती है, शरीर तो राख हो जाता है. आत्मा जानती है इस मृत्युलोक से अमरलोक में अथवा नर्क से स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ते हैं.

- बाप आते हैं तुम बच्चों को फिर से विश्व का मालिक बनाने. तुम कितना बड़ा इम्तहान पास कर रहे हो. बड़े ते बड़ा बाप पढ़ा रहे हैं. जिस समय बाबा बैठ पढ़ाते हैं तो नशा चढ़ता है. बाबा बहुत जोर शोर से नशा चढ़ाते हैं. बाप आते ही हैं अमरलोक के लिए लायक बनाने.

- तुम बच्चे विश्व के बादशाही की बहुत बड़ी लौटरी लेते हो. परन्तु तुम हो गुप्त. तो ऐसी ऊंच पढ़ाई पर अच्छी रीति ध्यान देना चाहिए. सिर्फ याद की यात्रा से काम नहीं चलेगा, पढ़ाई भी जरूरी है. पढ़ाई है 84 का चक्र, यह भी बुद्धि में फिरना चाहिए.

- तुम समझते हो बाबा बड़े जोर से नशा चढ़ाते है. तुम्हारा जितना बड़ा आदमी कोई बन न सकें, तुम मनुष्य से देवता बन जाते हो. विश्व का मालिक तुम्हारे सिवाय और कोई बना है क्या?

- बाप आये है तुमको विश्व का मालिक बनाने, जायेंगी तो सब आत्माये मुक्तिधाम में. लेकिन वहॉ जाकर सबको सिर्फ बैठ जाना है क्या? वह तो कोई काम के न रहे. काम के तो तुम हो जो फिर आकर स्वर्ग में राज्य करते हो. तुम यहॉ आये ही हो स्वर्ग कि बादशाही लेने. तुम्हारे पास बादशाही थी, फिर माया ने छिन ली. अब फिर माया रावण पर जित पानी है, विश्व का मालिक तुमको ही बनना है.

- बाप कहते है देह सहित जो कुछ देखते हो उन सबको भूल जाओ. इसमें ही अटक पड़े तो ऊंच पद पा नहीं सकोगे. बाबा तुम्हें पुरुषार्थ तो करायेंगे ना. तुम यहॉ आये हो नर से नारायण बनने.

विश्व की सर्व आत्माओं का भाग्यविधाता, स्वयं परमात्मा अभी हम सब भाग्यशाली आत्माओं को नये कल्प में अपना भाग्य कैसे श्रेष्ठ बनाये उसका रास्ता बता रहे हैं. हम सब यह भी जानते है कि अभी बहुत थोड़ा समय रह गया है. तो इस बचे हुए समय को हमें बाबा की याद और ईश्वरीय सेवा में सफल करना ही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली पर विचार-सागर-मंथन ---------- Date: 07-08-14

हम सब में से जिसने भी गीता पढ़ी या सुनी हैं, उसे यह श्लोक – यदा-यदा ही धर्मस्य ग्लानि भवतू भारतम - तो जरूर याद होगा. आज की बाबा की मुरली में बाबा ने हमें यह श्लोक की सही समझ हम बच्चों को दी हैं.

गीता के श्लोक का मतलब होता हैं, जब भारत में धर्म की संपूर्ण ग्लानि हो जाती है तब भगवान इस धरती पर आते है और वापस धर्म की स्थापना करते हैं.

कौन सा धर्म? भारत का ओरिजिनल आदि सनातन दैवी-देवता धर्म.

बाबा ने हम बच्चों को इस सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हुए समझाया है की सतयुग में यही भारत में जब आदि सनातन दैवी-देवता धर्म था तो यही भारत में सभी मनुष्यों दैवी-गुणों वाले दैवी-देवता थे, जिसमें पवित्रता मुख्य थी. जिस भारत में, सतयुग में, बच्चे भी पवित्रता से पैदा होते थे और आज भी जिस भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर, जो इस काली-कलयुगी दुनिया में भी पवित्र रहता है. जिस भारत के हिमालय को ही दुनिया का सबसे पवित्र स्थान कहा जाता है की जहां द्वापर से अनगिनत सन्यासीओं ने पवित्रता की धारणा कर भारत को और गिरने से बचाया. आज इसी भारत की हालत कैसी हैं यह तो हम सब जानते हैं.

भारत का ओरिजिनल दैवी-देवता धर्म तो द्वापर से ही प्रायः लोप हो जाता है, फिर भी जो देवी-देवताओं की आत्माये सतयुग से चली आती है उसमें पवित्रता 8 से 12 कला तक रहती है जो धीरे-धीरे कम हो कर, अभी कलियुग के अन्त में जीरो कला हो जाती हैं. जब हम सब की आत्माये शूद्र बन जाती हैं. तो हम अपने को दैवी-देवता कहला नहीं सकते, बल्कि अपने ही ओरिजिनल स्वरूप, दैवी-देवताओं के आगे जाकर पैर पड़ते हैं. हम कहते है तुम सर्व-गुण सम्पन्न, सोले कला संपूर्ण...हम नीच-पापी. कैसी विचित्र स्थिति है? इसको ही धर्म ग्लानि कहा जाता हैं. जो मनुष्य अपने धर्म को भूल, भगवान को भी भूल, अपने ही ओरिजिनल स्वरूप को भगवान समझ विविध प्रकार से प्राथनाये, अर्चनाये कर दर-दर भटकता रहता है. इससे बड़ी धर्म ग्लानि क्या हो सकती है?

इसे यही सिद्ध होता है की सत्य गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा शिव है और यह टाइम भी वही है जब की महाभारत की युद्ध, हम सब आत्माये माया-रावण से करते है और भगवान का साथ लेकर माया-रावण पर विजय पाते है और फिरसे इस धरती पर सतयुग की स्थापना करने में भगवान शिव के सहयोगी बनते हैं.

आज फिरसे हम सब संपूर्ण पवित्रता की प्रतिज्ञा को याद करते है की कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 08-08-14

साधारण मनुष्य को ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनाने वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने हम बच्चों को कहा, तुम्हें कर्मातीत अवस्था को पाना है तो मन-बुद्धि से पूरा-पूरा सरेन्डर होना पड़ेगा. शरीर छोड़ते समय धन, दौलत, बच्चे आदि कुछ भी याद न आये. एक बाप की याद में ही शरीर का त्याग करें, तब कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे.

हम चेक करें की हमारा मन दिन-भर में किसमें ज्यादा बीजी होता हैं - तो चार बातें आयेगी. जिसे हम क्रमशः ही हमारे में चेक करेंगे और उसमें से हमारी मन-बुद्धि को हटाने की कोशिश करेंगे.

चार बातें हैं -- शरीर, सम्बन्ध, सम्पति, और साधन

सबसे पहले साधनों से मन-बुद्धि को कैसे निकाले. आज-कल हमारा मन सबसे ज्यादा जाता हैं सेल-फोन पर, फिर हैं कार पर और बाद में हैं कोम्पुटर, टीवी....लिस्ट लंबी हैं. अगर हम सच्चे दिल से अपने-आप को यानी अपनी अन्तर-आत्मा को पूछें कि इसमें से कोई भी साधन मुझ आत्मा को सुख-शांति देता हैं, तो सही जवाब तुरंत मिलेगा. अमेरिका में ब्रहमाकुमारिझ का एक सेन्टर हैं (peace village) जहाँ पर कोई भी सेल-फोन सर्विस प्रोवाइडर के टावर कि सिग्नल पहोचती नहीं हैं और हर साल वहॉ बहुत से लोग मुलाकात लेते हैं और सब के मुख से इतना जरूर निकलता हैं कि सेन्टर में शांति बहुत अच्छी हैं और इसका एक कारण ये भी हैं की वहॉ सेल-फोन युज नहीं हो सकता, क्योंकि सिग्नल ही नहीं हैं. अब कलयुगी तमोप्रधान वायुमंडल में रहते स्वयं को सेल-फोन सिग्नल से तो बचा नहीं सकते लेकिन बाबा ने हमें राजयोग सिखाकर हमारी बुद्धि को डिवाइन बना दिया हैं, जिसे हम अपने मन को कंट्रोल जरूर कर सकते हैं. इसका मतलब हैं साधनों को युज करना हैं लेकिन अपनी जरूरीयात अनुसार, ना की अपने शोख के कारण, उसमें वशीभूत नहीं होना हैं.

दूसरा हैं सम्पति. ज़रुरियात से ज्यादा, गलत तरीके अपना-कर सम्पति इकट्ठी करनेवालों की हालत तो हम जानते ही हैं, रात को नींद नहीं आना, बिना कारण टेन्सन में रहना, छोटी उमर में ही हार्टएटेक आना....लिस्ट लंबी हैं. अगर ईश्वरीय नियमों के आधार पर ही कमायेंगे, ज्यादा लोभ-लालच में नहीं जायेंगे और कोई भी गलत तारिका नहीं अपनायेंगे तो हमारे पास सम्पति होते भी उसमें लगाव नहीं रहेगा, ये एक कुदरती सत्य हैं. याद रहे धन को सम्पति कहा जाता है, माया नहीं. जभी हम धन को पाने के लिए लोभ-लालच करते है तो उसमें हमारा मोह हो जाता है और वही अन्त में दुख देता है.

तीसरा हैं सम्बन्ध. बाबा कलयुगी सम्बन्ध को बंधन कहते हैं क्योंकि यहॉ के सम्बन्ध ज्यादातर दुख देने वाले हैं. जब की सतयुग के सम्बन्ध सुख देने वाले हैं. यहॉ का कोई भी सम्बन्ध किसी के शरीर से मोह या

लगाव के आधार पर ही होता हैं. सतयुग में आत्मिक सम्बन्ध हैं उसमें कोई विकार की बदबू नहीं हैं. हमें स्वयं में चेक करना हैं की हमारे किसी भी सम्बन्ध में बंधन तो नहीं हैं. ऐसा तो नहीं के इसके बिना रह नहीं सकते. याद रहे अगर मेरा कोई भी सम्बन्ध में बंधन हैं तो वही अन्त समय में याद आयेगा और हम फेल हो जायेंगे. सर्व सम्बन्धों से मुक्त होने का उपाय एक ही हैं की सर्व सम्बन्ध मुझे एक बाप से ही अनुभव करने हैं और इसके लिए बार-बार एक ही बात याद रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई.

सबसे ज्यादा हमारा लगाव होता हैं स्वयं के शरीर में. एक होता हैं शरीर की संभाल करना और दूसरा होता हैं शरीर में मोह होना. शरीर का संभाल करने के लिए शरीर को स्वच्छ, और्गेनिक, फ्रेश, शुद्ध शाकाहारी, ईश्वरीय नियमों अनुसार भोजन दो, नियम अनुसार व्यायाम करो, सिझन अनुसार कपडे पहनो और ईश्वरीय नियम अनुसार नींद और स्नान करो. लेकिन अगर शरीर में मोह है तो शरीर को बार-बार आईने में जाकर देखेंगे, शरीर का शृंगार करेंगे, शरीर में कोई रोग न हो तो भी डॉक्टर के पास इसको और भी ज्यादा रुष्ट-पुष्ट कराने के लिए जायेंगे, शरीर को गंदा भोजन देंगे और शरीर द्वारा अलग-अलग रसा-स्वाद लेंगे...ऐसी बहुत लम्बी लिस्ट हैं जो हम अपने में चेक करें की हमारा इस कलयुगी देह से कितना मोह हैं.

बाबा कहते हैं हमारा अन्त समय ऐसा हो जैसे की एक सर्प अपनी खाल निकाल देता हैं ऐसे हम आत्माये भी बाबा की याद में खुशी-खुशी शरीर को छोड़ दे तो अवश्य कर्मातीत अवस्था को पायेंगे.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:09-08-14

जिसे सारे विश्व कि सर्व आत्माये सत्य (Truth) कहती है, वह सत्यवान परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने आज की मुरली में हम सेवाधारी बच्चों से कहा, ऑनेस्ट उसको कहा जाता है जो सारे युनिवर्स की सेवा करें. एक सेन्टर खोला, आप समान बनाया, फिर दूसरे स्थान पर सेवा के लिए जाना चाहिए. एक ही स्थान पर अटक नहीं जाना चाहिए.

हम सब में से जो भी लौकिक नौकरी करते है, वह सब जानते है वहॉ क्या होता है? जब कोई नया भरती होता है और शायद वह ज्यादा तेज है तो उसका उपरी उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? उसे कोई भी नया काम सिख ने के लिए देंगे तो उसकी बार-बार भूल निकालेंगे, दूसरों के सामने उसे नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे. वह हर प्रयास करेंगे कि उसका उमंग-उत्साह ही टुट जायें. उपरी यह भी इच्छा रखेंगे कि वह उसका ही कहा मान कर चले या उसे बड़ा मान दे, क्योंकि वह उसका सीनियर हैं. उपरी जो होगा, नये को सदा अपने से 2-3 स्टैप नीचा रखेंगे.

अभी हमें अपने में चेक करना है कि हम जो भी निमित्त है सेन्टर चलाने के या सेन्टर में सरेन्डर होकर निमित्त सेवा करने के, हमारे साथ जो भी जूनियर है या नया आता है, उसके साथ हम कैसा व्यवहार करते है?

बाबा ने आज स्पष्ट कहा कि ऑनेस्ट सेवाधारी वह है जो दूसरों को आप समान बनाये और एक जगह ठहर न जाये पर दूसरे सेन्टरो पर जाकर भी सेवा करें और वहॉ पर भी ऐसे ही दूसरों को आगे बढ़ाये. बाबा ने कहा, बाबा नये-नये सेन्टर पर अच्छी-अच्छी ब्राहमणियों (टिचर्स) को रखते है इसलिए कि जल्दी-जल्दी आप समान बनाकर फिर और सेन्टर्स पर भागना चाहिए सर्विस को उठाने के लिए. ब्राहमणियों का काम है एक सेन्टर जमाया फिर जाकर और सेन्टर जमावें.

लौकिक में एक बिजनेसमेन बाप अपने बच्चे को जब नया बिजनेस सिखाना चालू करता है तो कैसे उसे हर एक बात अच्छी तरह से समझाता है, उसके हर कार्य पर ध्यान देता है. फिर बहुत सच्चे दिल से उस कार्य को बच्चा ठीक से कैसे करें वह भी सिखाता है. फिर उस बच्चे के कार्य में वह पूरा फ़ेथ भी रखता हैं. जब वह बच्चा कुछ बिजनेस अपने आप करना चालू करता है तो वह बाप सबसे ज़्यादा खुश होता हैं. एक बिजनेसमेन बाप ही पूरा ऑनेस्ट होकर अपने बच्चे को बिजनेस सिखाता है क्योंकि उस बच्चे को उसे आप समान बनाना हैं.

वैसे ही हमें भी बाबा ने जो भी सेवा निमित्त बनाया है वह सेवा हमें दूसरों को सच्चे दिल से सिखलानी चाहिए कि वह भी सेवा के लायक बन जाये और जब वह सेवा के लायक बन जाये तो हमें दूसरी सेवा में लग जाना चाहिए या दूसरे सेन्टर पर जाकर सेवा करनी चाहिए.

ऐसा देखा गया है कि जो बच्चे, सच्चे दिल से बाबा कि यज्ञ सेवा करते है और बहुतो को आप समान बनाते है, उनका नाम और शान भी बढ़ता है और बाबा भी उनसे बहुत-बहुत सेवा करवाता है - इसे ही कहते है, सच्चे दिल पर साहेब राजी.

ॐ शांति.

आज की अव्यक्त मुरली पर सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 10-08-14

आज बाबा ने हम बच्चों से पुछा, शान्त के साथ-साथ अति शान्त और अति रमणीक अवस्था का अनुभव है? स्मृति का स्विच ऑन किया और ऐसी स्थिति में स्थित हुए.

हम क्या अभ्यास करें, कि हमारी सब कि अवस्था ऐसी हो जायें?

योग में अति शान्त और अति रमणीक अवस्था का अनुभव करने की योग्य विधि -

1. एकाग्रता की शक्ति को युज कर स्वयं को आत्मिक स्थिति में स्थित करना हैं. आत्मिक स्थिति बनाने के लिए, नीचे दिये हुए स्वमानो को सिमरन कर, स्वयं को आत्मा निश्चय करना हैं. इस अन्तर्मुखी आत्मिक अवस्था में स्थित होने से हमारे विचार कम होने लगते हैं, व्यर्थ समाप्त हो जाता है. आत्मा ज्यादा रीलेक्स महसूस करती है, जैसे कि आत्मा हल्की हो गई हो.

में आत्मा हूँ. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूँ.
में आत्मा हूँ. शांत और पवित्र स्वरूप हूँ. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.
में आत्मा हूँ. सत्य हूँ. चैतन्य हूँ. आनंद स्वरूप हूँ.
में आत्मा हूँ. अजड, अमर, अविनाशी हूँ.
में आत्मा हूँ. चैतन्य शक्ति हूँ. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही इस शरीर को चला रही हूँ.
में आत्मा हूँ. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

2. अब हमारी दिव्य-बुद्धि को युज कर परमधाम का चित्र निर्माण कर, स्वयं को धीरे-धीरे शरीर से अलग कर, में आत्मा, एक ज्योति सितारा, पृथ्वी, चांद, सूर्य ओर अन्य ग्रहों से ऊपर, परमधाम की ओर जा रही हूँ. जैसे ही हम दिव्य-बुद्धि का उपयोग कर शरीर से अलग होने का विचार करते है, हमारा मन बहुत शांत हो जाता है ओर शरीर ठंडा पड़ जाता हैं. ये विधि में एक से पांच सेकेण्ड ही लगता है. अगर हमें ज्यादा समय यहां लगता है तो समझ ना चाहिये की हमारा पहला स्टैप ही ठीक नहीं हैं ओर स्वयं को अन्तर्मुखी आत्मिक अवस्था में स्थित करने का ज्यादा पुरुषार्थ करना चाहिये.

3. अब हम परमधाम में परमपिता-परमात्मा की छत्रछाया में है. परमधाम, वह स्थान हैं जो समय, संकल्प ओर साउण्ड (आवाज) से परे हैं. यहाँ पहुँचते ही हम फील करेंगे की "में ओर मेरा बाबा" दूसरा ना कोई. हमारी आत्मा पर बाबा से गुणों ओर शक्तिओं की किरणें आ रही है. हमारी आत्मा अतीन्द्रिय सुख अनुभव करती है. इस स्थिति में आत्मा को शरीर का भान, बिलकुल निकल जाता है. आत्मा बहुत शक्तिशाली अनुभव करती है. इस को ही ज्वालामुखी योग भी कहा जाता है, जिससे हमारे पुराने संस्कार भस्म हो जाते है. आत्मा पावन बन जाती है.

जीतना हम इस अभ्यास को बढ़ायेंगे उतना ही हम अति शांत और अति रमणीक अवस्था का अनुभव जब चाहे तब कर सकेंगे.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-08-14

विकारी मनुष्यों को श्रेष्ठ कर्म सिखलाकर, निर्विकारी देवी-देवता बनाने वाले, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अब विकर्म करना बन्द करो क्योंकि अब तुम्हें विकर्माजीत बन कर, विकर्माजीत संवत (सतयुग) शुरू करना है.

बाबा ने हम बच्चों को श्रेष्ठ-कर्म, अकर्म और विकर्म कि गुह्य गति के बारे में पूरा ज्ञान दिया हैं.

हम आत्माये सतयुग से त्रेता के अन्त तक जो भी कर्म करते है वह अकर्म है, क्योंकि सतयुग-त्रेता में चलने वाला पार्ट, हमारे अभी कीये हुए श्रेष्ठ कर्मों का प्रालब्ध है. दूसरा वहॉ आत्माये, आत्म-अभिमानी रहकर पार्ट बजाती है और तीसरा वहॉ माया-रावण होती ही नहीं इस लिए वहॉ के कर्म सब अकर्म होते है जिसका कोई भी खाता नहीं बनता.

द्वापर से माया-रावण का राज्य चालू होता है. तो द्वापर से कलियुग अन्त तक, हम आत्माये देह-अभिमान में रहकर पार्ट बजाते है तो इस दौरान जो भी कर्म करते है वह सब विकर्म हो जाते है. क्योंकि यह कर्मों का खाता बनता है, भले फिर आत्माये दान-पुण्य करें तो भी उसको भी चुकतु करना पड़ता है.

जब कलियुग के अन्त में शिवबाबा, ब्रह्मा के तन में आते है तो संगमपुग चालू होता हैं. बाबा आकर हमें अकर्म, विकर्म और श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान देते हैं. इस अमूल्य संगमयुग के समय का हमारा हर कर्म श्रेष्ठ कर्म हो इस लिए हमें दो बातों कि धारणा अवश्य करनी चाहिए.

1. हर समय बाबा के साथ का श्रेष्ठ संग हो. हम सब जानते है कि यह बात जितनी सरल कहने में लगती है उतनी सरल है नहीं. हर समय, श्वास और संकल्प बाबा की याद में समाई रहने वाली आत्मा ही कह सकती है की बाबा का श्रेष्ठ संग सदा साथ हैं. बाबा की याद में रहकर हम कोई भी अच्छा सेवा का कर्म करते है तो वह श्रेष्ठ कर्म बन जाता हैं, जो हमारा सतयुग-त्रेता में ऊँच भाग्य बनाता हैं.

एक बाप कि याद हमारे में समा जाये उसके लिए नीचे दी हुई ड्रिल हमें जब समय मिले करनी है.

सिमरन करें -- बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है.

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

2. स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहने की. जभी हमें बाबा कि याद भूल जाती है तो उस समय हम जो भी कर्म करते है वह सब विकर्म ही होते है, क्योंकि रावण राज्य है ना. अगर हमारे से कोई भी बड़ा विकर्म हो जाता है और उसे हम बाप से छिपाते है तो वह विकर्म कि सो गुना सजा खानी पड़ती है इस लिए संकल्प में भी कोई कि ईर्षा, निंदा या किसी प्रकार से अन्य आत्मा को दुख देने का विचार न आये और अगर आता है तो उसे बाप को सही-सही बता दे तो बाबा जरूर उसका कोई निदान कर देगा.

जो भी आत्माये ऊपर की दो धारणाओं पर ऐक्युरेंट चलती है तो उस आत्मा के श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ता ही जाता है और उसके आधार पर वह सतयुग में ऊँच पद को प्राप्त करती हैं.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-08-14

पतित-पावन, बबूलनाथ या कहे जादूगर बाप ने हम बच्चों को याद की यात्रा का महत्व समझाते हुए कहा, याद की यात्रा से ही तुम्हारी कमाई जमा होती है, तुम घाटे से फायदे में आते हो, विश्व के मालिक बनते हो.

आज भी बहुत बच्चे है जो कहते है निराकार को याद कैसे करें? या बाप को एक्युरेंट याद कैसे करें?

बाबा ने आज हम बच्चों को बहुत सहज रीति से याद की यात्रा सिखलाते हुए समझाया की पहले स्वयं को आत्मा के रूप में देखो और फिर वह पतित-पावन बाप की महिमा के गुणगान करो. यह बहुत ही सहज याद की विधि है जिसे हम देही-अभिमानी भी बनते जाते और बाप की महिमा के गुणगान कर बाप को याद करने से हमारी आत्मा भी पावन बनती जाती हैं. इस लिए बाप कहते है बाप की याद को योग अक्षर की जगह याद की यात्रा अक्षर काम में लाओ.

विधि -1

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> तुम जन्म-जन्मांतर पाप आत्माये हो ना. यह है पाप आत्माओं की दुनिया. सतयुग है पुण्य आत्माओं की दुनिया.
- बाप की महिमा के गुणगान करो --> अब पाप सब कटकर पुण्य कैसे जमा हो? एक बाप की याद से ही जमा होंगे.

विधि -2

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> यह हम आत्माओं को पढ़ाने वाली पाठशाला है. यह लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना हम आत्माओं का ऐम ऑबजेक्ट है. इस पढ़ाई से ही हम आत्माये पवित्र बन पवित्र दुनिया के मालिक बनेगी. हम आत्माये विश्व की मालिक बनेगी. 5 हजार वर्ष हुए, हम आत्माये विश्व की मालिक थी. कितना ऊँच पद था, हम आत्माओं का.
- बाप की महिमा के गुणगान करो --> जरूर बाप ही हमें ऊँच बनायेंगे. बाप को ही परमात्मा कहते है, उनका असूल नाम है शिव. बाबा को तो बबूलनाथ भी कहते है, जो हम कांटों को फूल बनाते हैं.

विधि -3

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> हमारी आत्मा पतित बनी है, उनको पावन जरूर बनना है. हम आत्माये ही महान आत्मा, पवित्र आत्मा और पाप आत्मा बनती हैं. हम आत्माये देहधारी बन कर जन्म-मरण में आती है, पुनः जन्म लेती हैं.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> उन्हें परमात्मा या ईश्वर कहते है. वह है ही विदेही, विचित्र, निराकार. उनकी आत्मा गर्भ से जन्म नहीं लेती, वह है पुनः जन्म से परे.

विधि -4

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> 84 जन्मो के बाद हमारी आत्मा अब पाप-आत्मा बन गई है. अभी हम आत्माओं को परमात्मा को याद करना है.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> बाबा की याद का योगबल से ही हम आत्माये पापों को खत्म करती है और पुण्य आत्मा बनती है. हमें सुख भी तब मिलेगा जब हम पूरा पुण्य आत्मा बनेंगे.

विधि -5

- पहले स्वयं को आत्मा निश्चय करो --> इस याद की यात्रा से हम विश्व के मालिक बनते है. पहले हम विश्व के मालिक थे ना, फिर हमने 84 जन्म लिए सूर्यवंशी-चंद्रवंशी बने.

- बाप की महिमा के गुणगान करो --> कहते भी है भक्ति का फल भगवान देते है. भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता है, वह है ही निराकार शिव. उनके लिए ही तो हम शिवरात्रि भी मनाते है. तो आयेंगे भी जरूर. वह आते ही है ब्रह्मा के तन में. वह तो सर्व आत्माओं का पिता हैं. ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी उनके बच्चे हैं. शिवबाबा अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर हमको ज्ञान देते हैं.

बाबा ने ऐसे सारी मुरली में हमें याद कि यात्रा सिखाई है जिसे हम देहि-अभिमानी बने और याद से हमारी आत्मा भी पावन बनती जायें.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 13-08-14

नयी दुनिया के रचयिता, परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - बाप, टीचर और सतगुरु यह तीन अक्षर याद करो तो उनकी शिफ्तें (विशेषतायें) भी याद आ जायेंगी.

बाबा ने आज सारी मुरली में बार-बार हम बच्चों को बाप को याद करने की एक और युक्ति बताते हुए कहा की बाप को उनके तीन ऑक्युपेशन - बाप, टीचर, और सतगुरु के रुप में याद करो, क्योंकि इस सारे कल्प के सृष्टि चक्र के ड्रामा में, सर्व आत्माओं में से एक बाप की ही आत्मा हैं जो तिन रोल अदा करती हैं - बाप, टीचर और सतगुरु. वह हम भाग्यशाली आत्माओं को बाप बन कर नयी दुनिया का वर्सा देते हैं, टीचर बनकर हमें नयी दुनिया में पार्ट बजाने के लिए पढ़ा कर तैयार करते हैं और सतगुरु बनकर हमें नयी दुनिया में भेज देते हैं. इस लिए जब हम अपने मन से याद करते हैं - वह हमारा बाप, टीचर और सतगुरु हैं - तो हमारी याद उसे तुरंत पहुँचती हैं क्योंकि सारे कल्प में एक ही आत्मा हैं जो यह तीनों पार्ट प्ले करती हैं.

बाबा ने जीतनी बार आज की मुरली में हमें उनको बाप, टीचर और सतगुरु के रूप में याद करने को कहा उसे फिरसे एक बार रिपिट करेंगे तो हमारे में बाप की याद सहज और पक्की होती जायेंगी.

- रुहानी बाप के रुहानी बच्चे यह तो हर एक जानते होंगे कि बाबा हमारा बाप भी हैं, टीचर भी हैं और सतगुरु भी हैं.

- कोई भी आये तो समझाना चाहिए कि जिसको भगवान कहा जाता हैं वह हमारा बाबा भी हैं, टीचर भी हैं और सतगुरु भी हैं.

- तुम बच्चे जानते हो हमारा बाबा बाप भी हैं, टीचर भी हैं और सतगुरु भी हैं.

- बाबा हमारा बाप भी हैं, शिक्षा भी देते हैं, वर्सा भी देते हैं, पवित्र भी बनाते हैं क्योंकि पतित-पावन बाप हैं और सबको सद्गति भी देते हैं.

- तो बाप बच्चों को कहते हैं सिर्फ यह विचार करो - बाबा हमारा बाप भी हैं, टीचर और सतगुरु भी हैं. सबको ले जाते हैं.

- तुम बैठे हो बाप, टीचर, सतगुरु के सामने तो वहीं याद आना चाहिए ना.

- यह शिवबाबा बाप, टीचर और सतगुरु हैं.

- यह हैं बहुत सहज ज्ञान और सहज योग. बाप, टीचर, सतगुरु को याद करने से उनकी शिफ्तें (विशेषतायें) भी बुद्धि में आ जायेंगी.

- शिवबाबा ही तुम्हारा बाप, टीचर, सतगुरु हैं उनको याद करो.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:14-08-14

हम भक्तों को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अभी तुम्हारी सब आशायें पूरी होती है, पेट भर जाता है, बाप आये हैं तुम्हें तृप्त आत्मा बनाने.

बाबा ने आज सारी मुरली में भक्ति और ज्ञान का अन्तर हम बच्चों को समझाया है. भक्ति में हम आधाकल्प जिसे पाने के लिए कहा-कहा भटकते थे, कई छोटी-मोटी अल्पकाल की आशायें पूरी हो जाये इसके लिए यात्राओं और मंदिरों के पीछे कितना खर्चा करते थे, कितना टाइम वेस्ट करते थे. वही ज्ञान सागर परमात्मा, अपने सहज ज्ञान से हमें आत्मा-अभिमानी बनाकर हमारी सर्व आशाओं को 21 जन्म के लिए पूर्ण कर देते है.

बाबा ने आज स्पष्ट कहा की सिर्फ ज्ञान लेने से हम आत्माये भक्त से ज्ञानी नहीं बनती लेकिन जब हम बाबा का ज्ञान स्वयं में धारण कर आत्मा-अभिमानी बनते है तब हम संपूर्ण ज्ञानी कहलाते है और संपूर्ण ज्ञानी आत्मा ही कर्मातित अवस्था को प्राप्त करती है.

आज बाबा ने हमें भक्ति और ज्ञान का अन्तर इस लिए समझाया की उसे धारण कर हमारी देही-अभिमानी अवस्था बने.

- भक्त लोग न खुद को जानते है, न ही भगवान को जानते है. तो जहॉ से कुछ अल्पकाल की प्राप्ति हुई, उसे ही भगवान समझकर उसकी भक्ति करने लग जाते है. परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने हम बच्चों को आत्मा और परमात्मा का सही ज्ञान दिया है. इसलिए अब हम समझते है वास्तव में भगवान तो एक ही निराकार को कहा जाता है. विश्व की सर्व आत्माये उसकी भक्त है, भगवान एक ही परमपिता-परमात्मा शिव है.

- भक्ति में हम शिव की पूजा बड़े लिंग के रूप में करते है लेकिन ज्ञान में बाबा ने हमें बताया की जैसे हम आत्माये अति सूक्ष्म ज्योति स्टार है वैसे ही हम आत्माओं के पिता, परमपिता-परमात्मा भी अति सूक्ष्म ज्योति स्टार मिसल है.

- भक्ति में दिन-प्रतिदिन रावण का चित्र बड़ा ही बनाते है. अगर रावण भी मनुष्य होता तो जैसे मनुष्य छोटे बड़े होते है रावण का चित्र भी छोटा बड़ा होना चाहिए. लेकिन नहीं रावण को दिन-प्रतिदिन बड़ा ही बनाते जाते है. ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की रावण तो मनुष्य आत्मा में पड़े पांच विकारों को कहा जाता है. जो द्वापर से, जब हम आत्माये, देह-अभिमानी बनती है तब से लेकर बढ़ते ही जाते है और इसके प्रतीक रूप हम रावण को बड़ा ही बनाते जाते है. अब संगम पर मीठे बाबा ने आकर हमें ज्ञान दिया जिसे हम वापस देही-अभिमानी बन जाते है तो यह रावण (विकारों) का भी दहन यानी विनाश हो जाता है.

- द्वापर से भक्ति काल में सब मनुष्य आत्माये अपने एक लौकिक बाप से वर्सा लेते है. लेकिन उस वर्से से आत्मा तृप्त नहीं होती यानी उससे आत्मा को संपूर्ण सुख-शांति की तृप्ति नहीं होती. अब संगम पर हम भाग्यशाली आत्माओं को बेहद के बाप से 21 जन्मो के लिए संपूर्ण सुख-शांति का वर्सा मिलता है. जिसे हमारी आत्मा बेहद के लिए तृप्त हो जाती है. 21 जन्मो के लिए कुछ भी मांगने से ही छूट जाते है.

- भक्ति मार्ग में समझते थे सुख या दुख सब ईश्वर ही देते है. कुछ भी हुआ तो समझते थे, ईश्वर की भावी. ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की ईश्वर कभी किसी को दुख नहीं देता. वह तो हम बच्चों के लिए 21 जन्म सुख और शांति का वर्सा देते है. फिर द्वापर से माया की भावी होती है तो मनुष्य आत्माये अपने कर्मों के आधार पर ही अल्पकाल के लिए सुख-दुख प्राप्त करते है.

- भक्ति में कितना दान-पुण्य करते थे ईश्वर के अर्थ. लेकिन इसे फायदा कुछ भी नहीं हुआ, फिर भी जन्म-जन्मांतर आत्मा की कला तो कम ही होती गई. बाबा के इस ज्ञान-यज्ञ में हम जो कुछ भी देते है उसका 21 जन्म के लिए हम आत्माये भाग्य बनाती है.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:15-08-14

विश्व की सर्व आत्माओं को मुक्ति और हम बच्चों को जीवनमुक्ति देने वाले, मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे शिवबाबा ने कहा, बाप आये है तुम्हें सच्ची स्वतंत्रता देने, जमघटों की सजाओं से मुक्त करने, रावण की परतंत्रता से छुड़ाने.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को अपने मीठे-मीठे, मधुर महावाक्यों से बार-बार रियलाइज कराया की कैसे हम आत्माये, आधा कल्प, रावण राज्य में देह- अभिमानी में आने से पतित बन गई है. अब बाप आये है पावन बनाने तो तीव्र पुरुषार्थ कर पावन जरूर बनना चाहिए.

हम बाबा के सालिग्राम बच्चे, बाबा को बहुत प्यार करते है और जिसे प्यार करते उसके तो कड़क बोल भी फूलों जैसे लगते है क्योंकि हम जानते है बाबा जो भी कहते है या करते है हमारे कल्याण के लिए ही करते हैं. इसलिए बाबा ने जो भी महावाक्य हम बच्चों प्रति उच्चारे उसको ही रिपिट करेंगे, जिसे की हमारी आत्मा जाग्रत हो जाये और जो बाबा चाहते है की अब तीव्र पुरुषार्थ कर जल्दी-जल्दी संपूर्ण बन जाये.

- बाबा अब बच्चों को रियलाइज कराते हैं - बच्चों, तुम्हें लज्जा नहीं आती, तुम पतित बन गये, अब पावन बनो.
- यहॉ परमपिता-परमात्मा ब्रह्मा द्वारा डायरेक्ट समझाते हैं - हे बच्चों, तुम बाप का कहना नहीं मानते हो.
- तुमको भी बाप समझाते हैं - मुझ अपने बाप को याद करो. तुमको शर्म नहीं आती तुम धड़ी-धड़ी मुझे भूल जाते हो.
- बाप डायरेक्ट कहते हैं अरे, बाप का कहना नहीं मानते हो.
- बेहद का बाप कहते हैं यह जन्म निर्विकारी बनो तो 21 जन्म निर्विकारी बन पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे. यह नहीं मानते हो.
- बाबा तुमसे बच्चे-बच्चे कह बात करते हैं. बच्चे, तुम्हें लज्जा नहीं आती! बाप को याद नहीं करते हो. बाप के साथ तुम्हारा प्यार नहीं है. कितना याद करते हो? एक घण्टा. अरे, निरन्तर याद करेंगे तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे. जन्म-जन्मांतर के पापों का बोझा तुम्हारे सिर पर है.

- बाप सम्मुख समझाते हैं - तुमने बाप की कितनी ग्लानि की है. तुम्हारे ऊपर तो केस चलना चाहिए. अखबार में कोई के लिए ग्लानि लिखते हैं तो उस पर केस करते हैं ना.

- अब बाप स्मृति दिलाते हैं - तुम क्या-क्या करते थे.

- बाप समझाते हैं ड्रामा अनुसार रावण के संग में यह हुआ है. अब भक्ति मार्ग पूरा हुआ, पास्ट हो गया, बिच में तुम्हें कोई रोकने वाला होता नहीं. दिन-प्रतिदिन उतरते-उतरते तमोप्रधान बुद्धि बुद्धू हो जाते हैं.

- जिसकी पूजा करते हैं, उनको ठिक्कर-भित्तर में कह देते हैं. इसको कहा जाता है बेहद की बेसमझी. बेहद के बच्चों की बेहद की बेसमझी. इतनी बेसमझी की जो बाप की ग्लानि कर दी है.

- कोई पाप करते हैं तो भगवान के आगे कान पकड़ कर कहते हैं - हे भगवान, बड़ी भूल हुई, रहम करो, क्षमा करो. तुमने कितनी बड़ी भूल की है.

- अब बाप कहते है तुमको और धर्म वालों का कल्याण करना है. बाप जो सबकी सद्गति करता है उनके लिए सब धर्म वाले कह देते हैं सर्वव्यापी है. यह कहाँ से सीखें. तुम्हारे कारण औरो का भी ऐसा हाल हो गया है. बाप कहते है तुम्हारे कारण सारी दुनिया चट खाते में गई है. निमित तुम बने हो.

- अभी सच्ची स्वतंत्रता देने बाप आये है. फिर भी रावण की जेल में परतंत्र होकर पाप करते रहते है. सच्ची स्वतंत्रता कोन सी है? यह मनुष्यों को तुम्हें बतलाना है.

- अब तुम जानते हो जब तक पावन नहीं बने हैं तब तक स्वतंत्र नहीं कहेंगे. फिर जमघटों की सजाये खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा. बाप आते है घर ले जाने. वहाँ सब स्वतंत्र रहते है. अब मेहनत करनी है बाप को याद करने की जिसे समय से पहले पावन बन जाये और पद भी ऊँच पाये.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:16-08-09

विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तेश्वर (लिबरेटर) बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम पवित्र बनने के बिगर वापिस जा नहीं सकते इसलिए बाप की याद से आत्मा की बैटरी को चार्ज करो और नैचरल पवित्र बनो.

रावण की विकारों रुपी जंजीरों में फँसी आत्माओं को मुक्ति का रास्ता बताते हुए परमात्मा बाप ने कहा, अब अपने घर (परमधाम) वापस जाना है तो बाप की याद से संपूर्ण पवित्र बनो यानी आत्मा की बैटरी को पुरा चार्ज करो और आत्मा को यह पुराना शरीर यहॉ ही छोडकर जाना है तो उसमें जरासा भी ममत्व न हो.

हम सब यह तो जानते है की सारे ज्ञान का सार है की अब घर जाना है फिर सतयुग में आना है. लेकिन हम आत्माये सतयुग में जब पहले-पहले पार्ट बजाने आते है तो हमारी आत्मा की पवित्रता की डिग्री सोलह कला संपूर्ण होती है यानी आत्मा की बैटरी पुरी 100 परसेन्ट चार्ज होती है. फिर जन्म-बाय-जन्म, हमारी आत्मा की पवित्रता की डिग्री कम होती जाती है. अब 84 जन्मों के अन्त में हमारी आत्मा की पवित्रता जीरो डिग्री (जीरो कला) हो जाती है यानी हम आत्मा तो है लेकिन उस पर विकारों कि जंक लग जाती है. तो आत्मा के जो भी ओरिजिनल गुण है पवित्रता, शांति, सुख, प्रेम और आनंद, सब विकारों के नीचे ढक जाते हैं अथवा कहे आत्मा की बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है और इसकी वजह से आत्मा शक्तिहीन बन जाती है. इसे आत्मा का तमोप्रधान स्टेज कहा जाता है.

आत्मा तमोप्रधान बनने से प्रकृति के पांच तत्वों का शरीर भी तमोप्रधान बन जाता है क्योंकि प्रकृति हमेशा पुरुष (आत्मा) को फोलो करती है. इसलिए कलियुग का वायुमण्डल भी गंदा और विकारी बन गया हैं.

अब कलियुग के अन्त में, पुरुषोत्तम संगमयुग पर स्वयं परमात्मा इस धरती पर आते है और स्वर्ग में आने वाली सब आत्माओं को आत्मा-परमात्मा और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का सारा ज्ञान देते है और तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनने का रास्ता बताते है. जब हम आत्माये, परमपिता-परमात्मा से योग करते है या कहे स्वयं को आत्मा समझ

परमात्मा को याद करते है, तब पतित-पावन बाप से हम आत्माओं में लाइट और माइट भरती जाती हैं. हमारी आत्मा में लाइट आने से, आत्मा में जो विकारों की जंक लगी है वह धीरे-धीरे कम होती जाती है और हमारी आत्मा में माइट (शक्ति) आने से आत्मा शक्तिशाली बनती हैं.

आत्मा में जितनी लाइट आती है उतनी आत्मा जीरो डिग्री से वापस सोलह कला की तरफ आगे बढ़ती जाती हैं और आत्मा में जितनी माइट आती है उतनी आत्मा ईश्वरीय श्रीमत् पर चल, दैवी-गुणों की धारणा करती जाती हैं.

इसे यह साबित होता है जितना हम अभी पुरुषार्थ कर बाबा को ऐक्युरेंट याद करेंगे उतना हम आत्माये वापस हमारा जो ओरिजिनल स्टेज है जिसे आत्मा की संपूर्ण अवस्था कहा जाता है उसको प्राप्त कर सकते हैं. बाबा ने कहा है, अगर आत्माये समय से पहले नैचरल रुप से संपूर्ण नहीं बनी तो सजाये खाकर भी संपूर्णता प्राप्त करनी पड़ेगी, लेकिन इससे सतयुग में पद कम हो जायेगा.

अभी तो हमारे पास समय भी बहुत कम है तो आज से यह नहीं देखे की हम बाबा को कितना याद करते है लेकिन यह देखे की सारे दिन में कितना समय बाबा को भूल जाते है, क्योंकि हमें बाबा को अभी हर पल याद करना ही है.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:18-08-14

इस विश्व के सर्व गुरुओं कि भी सतगति करने वाले सुप्रीम सतगुरु ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - यह ब्रह्मा है सतगुरु की दरबार, इस भृकुटी में सतगुरु विराजमान हैं, वही तुम बच्चों की सतगति करते हैं.

भक्ति में जिसे पाने के लिए अज्ञानी मनुष्य अपनी मृत्यु से पहले, चार-धाम की यात्रा कहो या बारह ज्योंतिर्लींग की यात्रा करते है, काशी कल-वट भी खाते थे. समझते थे की मृत्यु के बाद, मनुष्य आत्मा जा के पर-ब्रह्म में लीन हो जायेंगी और ये कलयुगी दुनिया से उसे मुक्ति मील जायेगी. वही परमपिता-परमआत्मा शिव अभी संगम पर हम भाग्यशाली बच्चों को सच्ची गति-सतगति में जाने का रास्ता बता रहे हैं. वही सर्व आत्माओं का सुप्रीम बाप, पहले हम आत्माओं की पालना करते है, फिर सुप्रीम टीचर बनकर हम आत्माओं को सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देते है और जब हम आत्माये इस ईश्वरीय पढ़ाई को धारण कर संपूर्ण बन जाते है तो वह हमारे सुप्रीम सतगुरु बन हमें सतगति में भेज देते है.

बाबा अभी सुप्रीम सतगुरु के रुप में तिन मुख्य कार्य करते है.

- हम भाग्यशाली आत्माओं को सच्ची गति-सतगति अथवा कहें मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाने का रास्ता दिखाते हैं यानी हमें सच्ची गति-सतगति में जाने का ज्ञान देते हैं.

- हम भाग्यशाली आत्माओं का हर-रोज मुरली में आते वरदानों से शृंगार करते है. जैसे के आज की मुरली में बाबा ने हमें हीरो पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा का वरदान दिया हैं और इसके लिए मुझे एक ही बात याद रखनी है की "मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ". अगर यह याद रहे तो हमारी आत्मा ओटोमेटिकली श्रेष्ठ बनने के संस्कार धारण करती चलेगी और सच में इस कल्प के ड्रामा में श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले देवी-देवता बन जायेंगे.

- जब हम भाग्यशाली आत्माये उस परमात्मा की याद में शरीर छोड़ते है तब वही सुप्रीम सतगुरु, सूक्ष्म देहधारी ब्रह्मा बाबा के भृकुटी में सवार होकर, हमें अपने नैनों की गोदी में बैठाकर सुक्ष्मवतन ले जाते है. जहॉ से वही सुप्रीम सतगुरु हमें बह्रमाबाबा के साथ परमधाम ले जायेंगे और फिर श्रीकृष्ण के साथ इस धरा पर फिरसे पार्ट बजाने भेज देंगे.

अपने सर्वोत्तम कार्य से हमारे जैसे साधारण मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ आत्मा बनाने वाले, ऐसे सुप्रीम सतगुरु को हम बच्चों का सत-सत नमस्कार हो, नमस्कार हो.

वाह मेरे सुप्रीम सतगुरु वाह और वाह मेरा भाग्य वाह.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:19-08-14

ज्ञान सागर बाप ने अपने विशाल ज्ञान के भंडार को दो शब्दों में समाते हुए कहा, मीठे बच्चे - बड़ा बाबा तुम बच्चों से ज्यादा मेहनत नहीं कराते, सिर्फ दो अक्षर याद करो अल्फ और बे, इस में सारा ज्ञान समाया हुआ है.

कैसे?

बाबा ने हमें जो भी ज्ञान दिया है उसे दो पार्ट में बांट सकते है -

1. आत्मा और परमात्मा का ज्ञान -- जिसका मुख्य सार है, हम सब मनुष्य आत्माये है या कहे जीवात्माये है और हमारा पिता, परमात्मा है. हम सब आत्माये हमारे प्यारे पिता के साथ परमधाम में रहते है और वहॉ से नम्बरवार पार्ट बजाने नीचे इस सृष्टि रुपी ड्रामा के स्टेज पर आते है. पार्ट बजाते-बजाते हम आत्माये सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाते है और अपने आप को यानी "मैं आत्मा हूँ," यह भूल जाते है. तब हमारे प्यारे पिता परमधाम से आकर हमें आत्मा और परमात्मा का ज्ञान देते है और कहते है, "हे आत्मा, अब मुझे (परमात्मा को) याद करो तो तुम वापस सतोप्रधान बन जायेंगे." इसी बात को बाबा ने आज एक शब्द में हमें समझाया - अल्फ़. अल्फ का मतलब होता है परमात्मा और उसे याद करने से हम आत्माये वापस पावन बन जायेंगी.

2. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान -- जिसका मुख्य सार हैं, इस सृष्टि का चक्र, चार मुख्य भागों में बटा हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलियुग. हम सब मनुष्य आत्माये, इस सृष्टि चक्र में, अपने-अपने समय पर पार्ट बजाने परमधाम से नीचे आते है. इस सृष्टि चक्र में हम आत्माये ज्यादा से ज्यादा, 84 जन्म और कम से कम 1 जन्म लेती है. सब आत्माओं को शुरू में सतोप्रधान, बाद में सतो, रजोप्रधान, रजो, तमो और तमोप्रधान के चक्र में से पसार होना पड़ता है. इस चक्र का आधा पार्ट या आधा कल्प, सतयुग और त्रेतायुग में, हम आत्माये आत्मा-अभिमानी हो कर और आधा पार्ट या दूसरा आधा कल्प, द्वापर और कलियुग में, हम आत्माये देह-अभिमानी हो कर पार्ट बजाते है. इस सृष्टि चक्र के आधा कल्प में, एक ही धर्म, जिसको आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है और बाकी आधा कल्प, तीन मुख्य धर्म - इस्लाम, बौद्ध और क्रिश्चन धर्म चलते है. हम देवी-देवता धर्म की आत्माये, आधा कल्प, देही-अभिमानी हो कर पार्ट बजाते हैं यानी हम खुद को आत्मा समझकर पार्ट बजाते हैं और हम मनुष्य आत्माये सब कर्मेन्दियॉ की नेचरल रुप से राजा होती है. जैसे की हम आत्माये बादशाह हैं और हमारी कर्मेन्द्रियॉ सब नेचरल रुप से कंट्रोल में रहती है. इसके कारण प्रकृति भी हमारी दासी हो कर पार्ट बजाती है. इस बात को बाबा ने एक शब्द में समझाते हुए कहा, "बे" यानी बादशाही को याद करो. इसे याद करने से हम आत्माये वापस स्वराज्य अधिकारी बन जाती है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-08-14

इस विकारी, कष्टभरी, मायावी कलयुगी दुनिया से मनुष्य आत्माओं और प्रकृति को मुक्त कर सुख और शांति की दुनिया में ले जानेवाले, सुख कर्ता - दुख हर्ता बाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - दुख हर्ता सुख कर्ता बाप को याद करो तो तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे, अन्त मति सो गति हो जायेंगी.

भक्ति में जिसे बार-बार पुकारते थे, हे सुख कर्ता, दुख हर्ता आओ और हम दुखियों के दुख दूर करो. वही परमात्मा ने स्वयं आकर हम बच्चों को ज्ञान दिया है कि कैसे वह अपना सुख कर्ता, दुख हर्ता का पार्ट अभी बजाते है?

जब हम मनुष्य आत्माये इस बेहद के सृष्टि चक्र के ड्रामा में पार्ट बजाते-बजाते, संपूर्ण सतोप्रधान से ड्रामा के अन्त में संपूर्ण तमोप्रधान बन जाती है तो हमारी आत्मा भी संपूर्ण सुखी से संपूर्ण दुखी हो जाती है. दुखी मनुष्य आत्माये, उस ईश्वर या परमात्मा को याद करती है, क्योंकि वह जानती है कि उसने ही कर हमें सुखी बनाया था. इसलिए फिर से आत्माये, ड्रामा अनुसार, इस कल्प के अन्त में, वही परमात्मा को याद करती है और कहते है - हे सुख कर्ता - दुख हर्ता, पतित-पावन आकर हम आत्माओं को पतित से पावन बनाकर, इस दुखों से मुक्त कर सुख में ले जाओ. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर, स्वयं भगवान, ईश्वर या परमात्मा अभी वही पार्ट बजाने इस धरा पर पधारे है.

सबसे पहले, वह आकर हम दुखी मनुष्य आत्माओं को सुख में जाने का रास्ता बताते है यानी ज्ञान देते है. फिर हम मनुष्य आत्माये, उस परमात्मा के संग में रहकर, इस कलयुगी, मायावी रावण कि विकारी दुनिया से वैराग्य करते है. जैसे की हम भगवान का साथ लेकर माया से युद्ध करते है. इस युद्ध में भगवान हमें पूरा साथ देते है और भगवान की मदद से हम माया पर विजय प्राप्त करते है. लेकिन इस युद्ध में हम भगवान का साथ तभी अनुभव करते है जब हम उसकी याद में रहते है. अगर हम भगवान को भूल, अपने आप ही माया से युद्ध करते है तो माया से हार खानी पड़ती है.

इसलिए बाबा हमें याद का महत्व समझाते है की उस सुख कर्ता - दुख हर्ता परमात्मा को याद करने से अभी माया से तो बचे रहेंगे और साथ-साथ हमारे लास्ट 63 जन्मो के पाप, जो हमारे विकारों के रूप में हमारी आत्मा में हैं, उसे भी भस्म करते जाते है. जैसे-जैसे हमारी आत्मा बाबा कि याद से विकारों से मुक्त होती जाती हैं वैसे-वैसे हम आत्माये, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती जाती है.

जब हम आत्माये बाबा की याद में रहकर सब विकारों से मुक्त होकर संपूर्ण सतोप्रधान या संपूर्ण पवित्र बन जाती है और बाबा की याद में रहकर ही इस कलयुगी देह का भी त्याग करती है तो हमारी आत्मा, विजयी-रतन आत्मा कहलाती है और बाबा के पास सूक्ष्म-वतन चली जाती है. फिर सतयुग में श्रीकृष्ण के साथ ऊँच पार्ट बजाने फिर से इस धरा पर आती हैं.

बाबा की याद और साथ सदा रहे, इसलिए नीचे बताई ड्रिल बार-बार करें.

सिमरन करें -- "बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है."

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:21-08-14

हम बच्चों को रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले, रचयिता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप ने तुम्हें संगम पर जो स्मृतियॉ दिलाई हैं, उसका सिमरण करो तो सदा हर्षित रहेंगे.

बाबा ने अपने महावाक्यों द्वारा हमें अपनी रचना के राज का, ड्रामा का और आत्मा-परमात्मा का सारा ज्ञान दिया है. बाबा ने आज सारी मुरली में रचना के आदि-मध्य-अन्त कि कुछ बातों को याद दिलाकर हमें खूब हर्षित किया हैं और एक तरीक़े से हमें कैसे रचना को याद कर खुश होना सिखलाया है.

आज बाबा ने रचना की जो बातों की स्मृतियॉ हमें दिलाई है उसे एक बार फिर से याद करके स्वयं को हर्षित करेंगे.

- मीठे-मीठे रुहानी बच्चों को रुहानी बाप समझाते हैं - तुमको अब स्मृति आई है कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, हम राज्य करते थे, हम बरोबर विश्व के मालिक थे. (याद करो अपने सुख के दिन)

- हमने ही सतयुग से लेकर जन्म लेते ८४ का चक्र पूरा किया. सारे झाड़ की स्मृति आई है. हम देवता थे फिर रावण राज्य में आ गये तो देवी-देवता कहलाने के लायक न रहे इसलिए धर्म ही दूसरा समझ लिया. हिन्दुओं को अपने धर्म का पता ही नहीं है कि हमारा हिन्दू धर्म कब से शुरू हुआ, किसने बनाया? (हमारे धर्म का राज जानने कि खुशी)

- अभी स्वयं रचयिता से हमें रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है, जिसे पढ़कर हमें राज्य-भाग्य मिलता है. फिर हमें रहने के लिए नई सृष्टि चाहिए. स्वयं रचयिता बाप आकर हमारे लिए पुरानी दुनिया का विनाश कर नई दुनिया स्थापन करते हैं. हमारे लिए विनाश जरूर होना है. कल्प-कल्पांतर हम यह पार्ट बजाते हैं. कल्प पहले भी बाबा से हमें बेहद सुख का राज्य भाग्य मिला था. (बाबा द्वारा हमारे लिए नये युग कि स्थापना कि खुशी)

- हरेक आत्मा को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है. हम आत्मा छोटी अविनाशी हैं, उनमें पार्ट भी अविनाशी है जो चलता ही रहेगा. यह बनी बनाई बन रही... इसमें नई बात कोई एंड वा कट नहीं हो सकती है. कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते. कोई मुक्ति मांगते है, मुक्ति अलग है, मोक्ष अलग है. यह भी अभी समझा है. (आत्मा और आत्मा का ड्रामा में पार्ट का राज जानने की खुशी)

- अभी हम मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे है. इसे पढ़कर फिरसे हम नई दुनिया में जायेंगे. यह है मृत्युलोक, यहॉ तो अचानक बैठे-बैठे मोत आ जाता है. उसका नाम ही है अमरलोक, वहॉ काया भी निरोगी रहेंगी. (यह स्मृति हमें शरीर छोड़ते समय भी खुशी देगी)

- इस जन्म के हमारे जितने भी पाप है वह सब अविनाशी सर्जन के आगे रख दिये और हल्के हो गये. बाकी जन्म-जन्मांतर के जो पाप है वह योग से खत्म कर रहे है. (इसे योग में उत्साह और खुशी रहती है)

- बाबा ने मनमनाभव का सही अर्थ समझाया है. मनमनाभव का अर्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो. यह है महान मंत्र, श्रीकृष्ण जैसा महान आत्मा बनने के लिए. (मनमनाभव का सही अर्थ समझकर उसे श्रेष्ठ फल प्राप्त करने की खुशी)

- भारत खंड में ही इतने देवी-देवताओं के मंदिर आदि है. यह भी खेल बना हुआ है जिसका वृतांत अब हम जानते है. शिवबाबा के भी कितने नाम, उनके अभी के कर्तव्य आधार पर रख दिये है और हर नाम पर अलग-अलग मंदिर बनाया है. भक्ति से हमने आधाकल्प सुख पाया है. लेकिन सतयुग-त्रेतायुग में भक्ति होती नहीं तो वहॉ मंदिर आदि कि दरकार नहीं है. अभी हमने जाना है कि आधाकल्प (द्वापर-कलियुग) भक्ति चलती है, बाकी आधाकल्प (सतयुग-त्रेतायुग) भक्ति का नाम-निशान नहीं. (भक्ति के राज को जानने कि खुशी)

आज की मुरली से ऐसे और बहुत सारी खुशीयॉ हम बटोर सकते है. याद रहे कि बाबा ने कहा है जितनी हम खुशी औरो को बाटेंगे उनी और खुशी हमारे में भी बढ़ेगी. ॐ शांति.

आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:22-08-14

हमें इस विकारी कलयुगी दुनिया से मुक्त कर, अपने साथ मुक्तिधाम ले जानेवाले मीठे-मीठे बाबा ने कहा, मीठे बच्चे - अब वापस घर जाना है इसलिए बाप को याद करने और चरित्र को सुधारने की मेहनत करो.

बाबा ने आज फिरसे हम बच्चों को हमारे स्वीट होम (मुक्तिधाम) कि बार-बार याद दिलाते हुए कहा, अब मैं तुमको वापस अपने घर ले चलने के लिए आया हूँ. लेकिन बाबा के साथ घर चलने के लिए संपूर्ण पवित्र भी जरूर बनना पड़े और संपूर्ण बनने कि एक ही युक्ति है स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद करो.

आज हम सब यह मुरली पॉइन्ट्स पढ़ते समय, स्वयं को आत्मा समझ बाप से डायरेक्ट पढ़ रहे है यह स्थिति बनाकर पढ़ेंगे तो बाबा कि याद और पढ़ाई दोनों में हम आगे बढ़ेंगे.

- मीठे-मीठे बच्चों को अब बाप ने घर (मुक्तिधाम) याद दिलाया है. भल भक्ति में भी घर को याद करते थे लेकिन वहॉ कब और कैसे जाना है, वह कुछ भी नहीं जानते थे.

- शास्त्रों में कल्प कि आयु लाखों वर्ष कह देने से, समझते थे घर जाने में बहुत टाइम बाकी रहा है तो घर भूल जाता था. अभी बाप कहते हैं - बच्चे, घर तो बहुत नजदीक है, अब चलेंगे अपने घर! मैं तो तुम बच्चों के बुलाने पर आया हूँ. चलेंगे?

- भक्ति में तो यह मालूम नहीं था कि मुक्तिधाम को ही हमारा घर कहा जाता है. न बाप को, न घर को जानते थे. जैसे कि अज्ञान नींद में सोये हुए थे. भक्ति में समझते थे मुक्तिधाम में जाने में बहुत टाइम पड़ा है. अब बाप ने आकर तुम्हें जगाया है. बाप कहते हैं मुक्तिधाम में तो अभी जाना है.

- अब बाप कहते हैं - बच्चे, घर तो बिल्कुल नजदीक है, अब में आया हूँ तुमको घर ले चलने. घर चलना है लेकिन पवित्र बनकर.

- अब बाप कहते है भक्ति अब पूरी होती है. भक्ति में तो अपरंपार दुख रहता है. ऐसे नहीं कि सारा आधाकल्प दुख होता है. ज्यादा दुख तो तुमने कलयुग के अन्त में भोगा है जबकि तुम

जास्ती विकारों में गंदे बने हो. अब बाप, बच्चों को कहते है सुखधाम चलना है तो पावन बनो. जन्म-जन्मांतर के जो पाप सिर पर है, उन्हें याद से उतारो.

- बाप कहते है तुमको ऐसा (लक्ष्मी-नारायण जैसा) बनना है तो पवित्र बनो और चरित्र सुधारो.

- बाप कहते है जब तक मैं हूँ तब तक तुम पुरुषार्थ करते रहो. बाप कितना वर्ष रहेंगे? बाप इतने वर्षों से बैठ समझाते हैं, अच्छा ही टाइम देते हैं. सृष्टि चक्र को जानना तो बहुत सहज है. बाकी जन्म-जन्मांतर के पाप कटने में देरी लगती है. इसके लिए ही बाबा टाइम देते है.

- यहॉ बैठते हैं तो सारा समय याद में थोड़े ही बैठते हैं, बहुत तरफ बुद्धि चली जाती है, इसलिए टाइम दिया है, मेहनत कर कर्मातित अवस्था को पाना ही हैं.

- बाप समझाते है, तुमको बेहद के बाप से वर्षा लेना है. भगवान तो है निराकार. कृष्ण तो देहधारी है उनको भगवान कह नहीं सकते. देहधारी मनुष्य तो पुनर्जन्म लेते है, उनसे बेहद का वर्षा मिल न सके. तुम आत्माओं को एक परमपिता-परमात्मा से ही वर्षा मिलता है.

- बाप तुम्हें याद दिलाते है, भक्ति में बाप को पाने के लिए तुम कितना भटकते थे. पहले तो एक शिव कि ही पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे. अभी तो ढेर चित्र है, मंदिर आदि बनाते है. भक्ति मार्ग में तुमको कितनी मेहनत करनी पड़ती है. मनुष्यों की भक्ति करना तो यह पांच तत्वों कि भक्ति करना है. शरीर तो पांच तत्वों का बना हुआ है. अब बच्चों को मुक्तिधाम में चलना है जिसके लिए इतनी भक्ति करते है. अब में तुमको अपने साथ ले चलता हूँ. वहॉ से तुम सतयुग में चले जायेंगे.

- अब बाप कहते है, भक्ति में तुमने ही मुझ पतित-पावन बाप को बुलाया है, मैं आया हूँ तो तुम पावन बनो ना. अपने को आत्मा समझ मामेकम याद करना है तो सतोप्रधान बन जायेंगे. फिर बाप तुम्हें साथ ले जायेंगे.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार ---------- Date:23-08-14

सत्य स्वरूप, ज्ञानसागर बाप ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - योग द्वारा तत्वों को पावन बनाने की सेवा करो क्योंकि जब तत्व पावन बनेंगे तब इस सृष्टि पर देवतायें पाँव रखेंगे.

आज कि मुरली में सत्य स्वरूप बाप ने कई सत्य हकीकतें कही है जो अभी भी ज्ञान मार्ग में आने के बाद भी हमने नहीं समझी थी. जैसे कि आज भी बाबा आते है तो कई बच्चों को होता है कि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखे या बाबा मुझे भाखी पहने. लेकिन बाबा ने आज बहुत स्पष्ट कहा कि भले हम अभी ज्ञानी बने है और हमारी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करते है लेकिन फिर भी हमारा शरीर तो भ्रष्टाचार से ही पैदा हुआ है और पतित ही रहता है. इसलिए हमारी जो कामनाएँ है कि बाबा मेरे सिर पर हाथ रखे या बाबा मुझे भाखी पहने, ये भी एक प्रकार से हमारे में देह-अभिमान का विकार है जो हम अपने विकारी देह को परमात्मा, जो संपूर्ण पावन है, वह टंच करें ऐसी इच्छा रखते है.

- सबसे पहली हकीकत बाबा ने बताई की यह पुरानी दुनिया विकारी है और यहाँ किसी भी आत्मा को शांति मिल नहीं सकती. शांति कि दुनिया है हम सब आत्माओं का घर शांतिधाम और फिर इस धरती पर शांति होती है सतयुग में. सतयुग में सुख और शांति दोनों है.

- दूसरी हकीकत बाबा ने बताई कि हम बेहद के बाप के बच्चे तो बन गये और बाप के बच्चे बनने से हमें बाप से पुरा वर्षा तो मिल गया. लेकिन अभी हमें पुरुषार्थ कर अपनी आत्मा को संपूर्ण पवित्र गुणवान यहाँ बनाना है. नहीं तो बहुत

सजायें खानी पड़ेगी. बाबा ने स्पष्ट कहा बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, हिसाब-किताब चुक्तु कराने वाला.

- तीसरी हकीकत बाबा ने बताई कि जो आत्माये इस ईश्वरीय ज्ञान को जल्दी से समझ लेती है उन्होंने ही भक्ति जास्ती कि है और वही आगे नम्बर में भी आयेंगे.

- चौथी हकीकत बाप के बताई कि ध्यान में जाकर, सतयुग या सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार करने से आत्मा पावन नहीं बनती. आत्मा को पावन बनाने के लिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और कोई बात नहीं.

- पाँचवीं हकीकत बाप ने बताई कि हम भले अभी ज्ञानी बने है और बाप को याद कर हमारी आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करते है. फिर भी हमारा शरीर तो विकारों से पैदा हुआ है और आत्मा शरीर छोड़ने तक शरीर विकारी रहता है. इस लिए आत्मा जब तक इस विकारी शरीर में रहकर पावन बनने का पुरुषार्थ भले करती हो लेकिन इस शरीर से किसी भी प्रकार का सुख लेने का ख्याल मात्र भी आत्मा को न आये.

- छठी हकीकत बाप ने बताई कि अभी हम आत्माये पुरुषार्थ कर जब संपूर्ण पावन बन जाती है तो यह प्रकृति भी परिवर्तन हो जाती है क्योंकि प्रकृति, पुरुष (यानी आत्मा) को फोलों करती है. फिर सतयुग में हमें शरीर भी पावन मिलेगा.

- सातवीं हकीकत बाप ने बताई कि कई बच्चे हमारी तक़दीर में होगा तो हम पुरुषार्थ कर लेंगे ऐसा सोचकर के पुरुषार्थ को तक़दीर पर छोड देते है. लेकिन असूल में हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार पर ही हमारी प्रालब्ध (यानी तक़दीर) बननी है. तो हमें बीस नाखुंनो का जोर लगाकर पुरुषार्थ पूरा करना है, जो सारे कल्प के लिए हमारी प्रालब्ध श्रेष्ठ बन जायें. ॐ शांति.

आज कि अव्यक्त मुरली का सहज सार ---------- Date:24-08-14

हम सब ब्राह्मण आत्माओं का इस पुरुषोत्तम संगमयुगी अव्यक्त ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है - ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण कर्मातित अवस्था को प्राप्त करना.

बापदादा ने हम बच्चों को ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण कर्मातित बनने के लिए, हमारी आत्मा का अन्तिम स्टेज कैसा हो, उसे समझाते हुए कहा, जैसे आदि स्थिति साकार स्वरूप में सहज ही स्थित रहते हो (हम लास्ट ५००० साल से, 83 जन्मो से इस स्थिति में रहे है), ऐसे अनादि निराकारी (परमधाम में बाबा के साथ, बिजरुप अवस्था) स्थिति इतनी ही सहज अनुभव होनी चाहिए.

कैसे हम यह अवस्था को प्राप्त कर सकते है?

इस ब्राह्मण जीवन में रहते जब चाहे तब अनादि स्थिति में स्थित हो जाये, उसके लिए बाबा को हमारे दिल में बैठाना पड़ेगा. हमारे पास अभी जीतना भी टाइम है, बाबा को सदा साथ रखना पड़ेगा. हमारे सामने साकार रुप में गुलजार दादी है, जिसको देखने से या साथ रहने से ही बाबा का संग का अनुभव होता है वैसे हमें अपनी स्थिति बनानी पड़ेगी.

बाबा की याद और साथ सदा रहे और जब चाहे तब अनादि अवस्था में स्थित हो जाये, इसलिए नीचे बताई ड्रिल बार-बार करें.

सिमरन करें -- "बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है."

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं. यह अनादि अवस्था है तो इस अवस्था में हमारे संकल्प सब मर्ज हो जाने चाहिए.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

बापदादा ने हमें साकारी ब्राह्मण जीवन में ब्रह्मा बाप के दो गुणों को हमारे में धारण करने को भी कहा.

- पर-उपकारी जीवन ----- इस का मतलब तो बहुत साफ है कि जैसे आम का पेड़ है और बच्चे उस पर लगे आम को तोड़ने के लिए उस पर पत्थर फेंकते है फिर भी वह आम का पेड़, खुद पत्थर खाने के बाद भी बच्चे को मीठा आम देता है. वैसे हमारे ब्राह्मण जीवन में हमें किसी से कोई शिकवा-गिला न हो. कोई हमें दुख भी देता हो लेकिन हमें उस पर भी रहम कि दृष्टि रखनी है और उसका भी भला करना है.

- बाल ब्रह्मचारी या सदा ब्रह्मचारी जीवन ---- सदा ब्रह्मचारी अर्थात संकल्प में भी किसी प्रकार कि अपवित्रता वृति को चंचल न बनाये. पहेली हार वृति कि चंचलता, फिर दृष्टि और कृति कि चंचलता होती है. वृति कि चंचलता भी रजिस्टर को दाग़ी बना देती है इसलिए वृति से भी सदा ब्रह्मचारी.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-08-14

पवित्रता के सागर, ऐवर-प्योर, पतित-पावन, विश्व में पवित्र दुनिया के रचयिता, परमपिता-परमात्मा शिवबाबा ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारा अनादि नाता है भाई-भाई का, फिर तुम साकार में भाई-बहन हो इसलिए तुम्हारी कभी क्रिमिनल दृष्टि नहीं जा सकती.

परमात्मा शिव द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र-यज्ञ का मुख्य कारण, इस विश्व की सर्व जीवात्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों को संपूर्ण पवित्र बनाकर इस विश्व पर, कल्प पहले माफिक फिर से संपूर्ण पवित्र दुनिया सतयुग की स्थापना करना हैं. इस लिए हमारे यह ब्राह्मण जीवन में पवित्रता धारण करना सबसे मुख्य हैं. हम सब आत्माये एक परमपिता-परमात्मा कि संतान है इसलिए आपस में भाई-भाई है, जब कि साकार में हम प्रजापिता ब्रह्मा कि संतान तो फिर आपस में भाई-बहन है.

हमारा अभी का पुरुषार्थ ऐसा हो जो हमारी आंख किसी में भी न डूबें, किसी के प्रति आकर्षित न हो. ऐसे ही हमें देख हमारे तरफ भी कोई बुरी दृष्टि से आकर्षित न हो.

संपूर्ण पवित्रता पर पूरा क्लास भेज रहे है, जिसे हमें संपूर्ण पवित्रता धारण करने में मदद हो.

किसे संपूर्ण पवित्र आत्मा कहा जाता हैं?

संपूर्ण पवित्रता यानी जीवन में जब से ब्राह्मण बने तब से बाल-ब्रह्मचारी की धारणा को संपूर्ण पालन किया हो. संपूर्ण पवित्र आत्मा यानी

- जिसकी वृति संपूर्ण पावन हो. वृति में रिंचक मात्र भी काम-विकार न हो.
- पावन वृति से अपनी दृष्टि और कृति को शुद्ध किया हो.
- स्वप्न में भी अपवित्रता न हो.
- सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सर्व आत्माओं प्रति भाई-भाई की वृति-दृष्टि हो.
- व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो.
- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट हो.
- अपने मन-वचन-कर्म से किसी को दुख न देती हो.

संपूर्ण पवित्रता धारण करने की विधि -

- स्वयं को आत्मा समझ परमपिता-परमात्मा शिवबाबा से ज्वालामुखी योग कर, अपवित्रता के संस्कारों को आत्मा में से जला कर भस्म करना हैं.

- ज्ञान को युज कर अपनी वृति को पावन करना हैं. सर्व आत्माओं के तरफ हमारी वृति अंदर से भाई-भाई की रखने की प्रैक्टिस करनी हैं.

- आत्मा मेंसे भय को निकाल, स्व से और परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहना ही हैं.

- व्यर्थ से मुक्त रहने के लिए, फालतू बातों को न सुनना हैं, न बोलना हैं और न देखना हैं.

- नींद में स्वप्न से मुक्त रहने के लिए, बाबा से दस मिनिट योग कर, बाबा की गोदी में सो जाना हैं.

- मन-वचन-कर्म से किसी का दुख लेना नहीं हैं और किसको भी दुख नहीं देना हैं.

संपूर्ण पवित्रता कि स्वयं में चैकिंग ---

- पवित्रता को चेक करने के लिए हमारी वृति को चेक करना हैं. अगर मेरी वृति स्वच्छ हैं तो मेरी आँखें किसी पर ठहरेगी नहीं, आँखें धोखा नहीं देगी. चेक करें की मन-वचन-कर्म से संबन्ध-सम्पर्क में आनेवाली सर्व आत्माओं प्रति हमारी वृति भाई-भाई रहती हैं.

- बाबा ने कहा हैं की व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता हैं. तो हमें ये स्वयं में चेक करना हैं की कहा तक व्यर्थ संकल्पों पर हमारा क़ाबू हैं?

- स्व से और परमपिता-परमात्मा से संपूर्ण ऑनेस्ट रहनेवाली आत्मा ही संपूर्ण पवित्र बन सकती हैं. तो चेक करें हम कितना ऑनेस्ट रहते हैं?

- इस समय प्रकृति के पांचों तत्व संपूर्ण तमोप्रधान हैं इसलिए जभी हम पानी पीते या खाना खाते, बाबा की याद में रह पवित्रता की दृष्टि देकर खाते हैं?

- स्वप्न में भी अपवित्रता न आये इसलिए सोने से पहले दस मिनिट बाबा को याद कर बादमें सोते हैं?

- चेक करो, हम किसी भी अन्य आत्मा को अपने मन-वचन-कर्म से दुख तो नहीं देती हूँ?

बाबा ने बताया हैं की पवित्रता ही सुख-शांति की जननी हैं. देवी-देवताये सब सुखी हैं इसका कारण वे संपूर्ण पवित्र हैं. याद रहे की पवित्रता मेरी पूंजी हैं, जैसे हमारे बचत खाते में रखी हुई पूंजी को हम संभाल कर रखते हैं, वैसे ही मुझे अपनी पवित्रता की संभाल करनी हैं.

प्रतिज्ञा -- कुछ भी हो जाये, चाहे अपने मन की स्थिति द्वारा, चाहे कोई अन्य आत्माओं द्वारा, चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे वायुमण्डल द्वारा कुछ भी हो जाये, मुझे पवित्रता की धारणा को पूरा पालन करना ही हैं.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ - Date: 26-08-14

अपनी सहज याद से हम तमोप्रधान आत्माओं को सतोप्रधान बनने का रास्ता बताने वाले, पतित-पावन बाप ने याद कि यात्रा सिखलाते हुए कहा, मीठे बच्चे - कामकाज करते हुए भी एक बाप की याद रहे, चलते फिरते बाप और घर को याद करो, यही तुम्हारी बहादुरी है.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें याद कि यात्रा का महत्व समझाते हुए बार-बार कहा, तुम्हें चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, उठते-बैठते, कोई भी काम-काज करते, एक बाप की याद में रहने का पुरुषार्थ करना है, क्योंकि याद से ही हमारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगी और अगर हमारा शरीर छूटने से पहले हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जाती है तो आत्मा विजयी होकर बाप के पास चली जायेंगी.

बाबा ने यह भी कहा कि किसी को ज्ञान देना या लेक्चर करना या लेक्चर लिखना तो बहुत सहज है क्योंकि उसमें माया तंग नहीं करती लेकिन बाबा की याद में ही माया आती है और याद को तोड़ देती है.

बाबा कि याद हमें कैसे सतत रह सकती है?

- इस के लिए सबसे पहले हमें यह पुरानी दुनिया से पुरा वैराग्य हो. क्योंकि आज-कल देखे तो सबसे ज्यादा हमारा टाइम पुरानी दुनिया के समाचार या पुरानी दुनिया कि गति-विधियां जानने में ही चला जाता है. इस लिए हमारे मन को हमें ट्रेइन करना है कि हमारे जोब (सर्विस) के रिलेटेड काम-काज के सिवाय ज्यादा कुछ भी हमारे मन को भारी न करें.

- जब हम काम-काज कर रहे है और हमारा काम ज्यादा बुद्धि को युज करने का है तो बीच-बीच में टाइम निकाल करके ट्रैफिक कंट्रोल या और कोई तरीका युज करके भी बाबा कि याद में रहना है. अगर हमारा काम ज्यादा बुद्धि को युज करने का नहीं है, जैसे की बाबा ने बताया चौकीदार या ऐसे काम करते तो बाप कि याद सहज रह सकती है.

- जब हम नौकरी पर जाते है तो कार चलाते बाबा के सोंग्स सुनते बाबा को याद कर सकते है. अगर पब्लिक ट्रांसपोर्ट युज करते है तो भी कान में हेड़फोन लगाकर भी बाबा के सोंग्स सुनते हुए बाबा को याद कर सकते है.

- दूसरा इस ब्राह्मण जीवन में हमारे पुराने सम्बन्ध है उसे भी वैराग्य होना चाहिए. इसका मतलब है लौकिक सम्बन्ध निभाए पर उसमें ज्यादा व्यर्थ टाइम न गवाए. इस कि जगह सर्व-सम्बन्ध का रस एक बाप से लेने का पुरुषार्थ करें.

- तीसरा हमारा मन ज्यादा धन प्राप्ति के पीछे भी नहीं जाना चाहिए. अपना घर-संसार चलाने के लिए धन कमाए पर उस के लिए लोभ-वृति रखकर धन कमाने के पीछे इस पुरुषोत्तम संगमयुग का अमूल्य समय बरबाद न करें.

- चोथा हमारा मन अपने शरीर को जरूरत से ज्यादा शृंगार करने में या कुछ भी हुआ न हो और फिर भी नाहक कि चिन्ता करने में न लगाये. जरूरत न हो फिर भी डॉक्टर के पास चैकिंग कराने या उसको और रुष्ट-पुष्ट बनाने में टाइम बरबाद न करें. क्योंकि बाबा ने बताया है कि इस मृत्युलोक में मनुष्य का शरीर का कोई ठिकाना नहीं, चलते-फिरते कभी भी आत्मा शरीर छोड़ देती है.

- सारे दिन के लिए हमें एक टाइम-टेबल बना देना है कि इतना घंटा तो हमें बाबा कि याद में बैठना ही हैं.

इस संगमयुग का अभी हमारे पास जितना भी समय बाकी बचा है उसमें हमारा हर सेकेण्ड, संकल्प और श्वास हमें एक बाबा कि याद में सफल करना ही है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 27-08-14

निराकार, परमपिता-परमात्मा, बेहद के ज्ञान सागर, अपने ज्ञान से हमें आत्मा-अभिमानी बनाने वाले बाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - मैं विदेही बाप तुम देहधारियों को विदेही बनाने के लिए पढ़ाता हूँ, यह है नई बात जो बच्चे ही समझते है.

सत्य गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा के महावाक्यों में रोज एक वाक्य बाबा हम बच्चों प्रति जरूर उच्चारण करते है - मनमनाभव जिसका मतलब होता है, खुद को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. क्योंकि बाबा चाहते है कि हम अभी आत्मा-अभिमानी बने और बाबा को याद करें जिसे हमारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाये.

बाबा जानते है कि हम बच्चे, सारे कल्प में अभी ही, संगमयुग पर आत्मा-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करते है और लास्ट ६३ जन्म हमने देह-अभिमानी बनकर पार्ट बजाया है तो अभी आत्मा-अभिमानी बनना इतना ईजी नहीं होता. सतयुग-त्रेता में हम आत्माये आत्मा-अभिमानी नेचरल रुप में रहते है, कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह तो अभी के पुरुषार्थ कि प्रालब्ध है. इसलिए बाबा हमें हररोज मुरली में इस बात को बार-बार याद कराते है कि अभी तुम आत्मा-अभिमानी बनो और बाप को याद करो.

आज कि मुरली में से कुछ पाइन्ट्स हम आत्म-अभिमानी बनकर, यह फिलिंग के साथ पढ़ेंगे कि बाबा से डायरैक्ट पढ रहे है तो हमें ऑटोमेटिकली बाबा कि याद भी रहेगी और आत्मा-अभिमानी बनने कि प्रैक्टिस भी होती जायेगी.

- बाबा ने कहा, इसको विचित्र रुहानी पढ़ाई भी कहा जाता है. नई दुनिया सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक देहधारी मनुष्य ही एक-दूसरे को पढ़ाते है, ऐसा कभी नहीं होगा कि विदेही बाप या रुहानी बाप पढ़ाते हो. सिर्फ संगम पर ही रुहानी बाप खुद आकर कहते हैं, इस ब्रह्मा द्वारा मैं तुम्हें पढाता हूँ.

- ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सब आत्माओं का बाप भी वहीं है. तो यह समझने कि बात है. देखने में तो बाबा आते नहीं. आत्मा ही है मुख्य और वह अविनाशी है, शरीर विनाशी है. अभी वह अविनाशी आत्मा बैठ तुम्हें पढ़ाती है. भले तुम सामने देखते हो कि यह साकार में तो ब्रह्मा का शरीर बैठा है, परन्तु यह तुम जानते हो कि यह ज्ञान कोई देहधारी नहीं देते है. ज्ञान देने वाला तो स्वयं विदेही बाप है.

- वह बाप खुद बैठ पढ़ाते है. कहते हैं मैं सब आत्माओं का बाप हूँ, जिसको तुम देख नहीं सकते हो. तुम समझते हो वह विदेही है. ज्ञान, आनंद और प्रेम का सागर है.

- बाप खुद तुम्हें समझाते है - मैं कैसे आता हूँ? किसका आधार लेता हूँ? मैं कोई गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ. मैं कभी मनुष्य या देवता नहीं बनता हूँ. मैं तो सदैव अशरीरी ही रहता हूँ. मेरा ही ड्रामा में यह पार्ट है जो मैं कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हूँ. तो यह समझने कि बात है, मुझे तुम देख नहीं सकते.

- बाबा कहते है - बच्चे तुम मुझो मत. बाप, तुम्हें बिगर पुछे ही सबकुछ साफ-साफ समझाते है, तो तुम्हें पूछने कि दरकार ही नहीं. मैं इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही अवतार लेता हूँ. मेरा जन्म ही वन्डरफूल है. तुम बच्चों को भी वन्डर लगता है, बाबा हमें पढ़ाकर कितना बड़े ते बड़ा इम्तहान पास कराते है, हमें सारे विश्व का मालिक बनाते हैं. बड़ी वन्डरफूल बात है ना.

- बाप कहते है - है आत्माओं, हर ५ हजार वर्ष बाद में तुम्हारी सर्विस में आता हूँ. मैं तुम आत्माओं को ही पढ़ाता हूँ. कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे तुम्हारी सेवा में आता हूँ. याद है तुम्हें, तुम आधाकल्प मुझे पुकारते आये हो - हे बाबा, हे पतित-पावन आओ. तो बाबा को भी आना पड़ेगा पतितो को पावन बनाने, इसलिए ही कहा जाता है - अकालमूर्त-सत बाबा, अकालमूर्त-सत टीचर, अकालमूर्त-सतगुरु.

- बाबा आकर क्या करते है - सिर्फ कहते है मनमनाभव. तुमको वही सतगुरु अकालमूर्त बैठ समझाते है इस ब्रह्मा के तन द्वारा कि अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो, तो तुम आत्माये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे.

- बाप कहते अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो आत्मा को ही देखो. इन जिस्मानी नेत्रों से देखो ही नहीं. हम सब आत्माये भाई-भाई है. हम अशरीरी आये थे, अब फिर अशरीरी बनकर घर जाना है. आत्मा सतोप्रधान आई थी अब फिर वापस सतोप्रधान बनकर घर जाना है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:28-08-14

ज्ञान सागर बाप ने आज एक और रीति से हम बच्चों को आत्मा का स्वदर्शन चक्र घुमाना सिखलाते हुए कहा, उत्थान और पतन, सतोप्रधान और तमोप्रधान, शिवालय और वेश्यालय, ऐसे दो-दो बातें स्मृति में रहें तो तुम स्वदर्शन चक्रधारी बन जायेंगे.

सबसे पहले हम यह जाने कि बाबा हमें स्वदर्शन चक्र घुमाना क्यों सिखलाते है या स्वदर्शन चक्र घुमाने से क्या फायदा है?

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से स्वयं कि देही-अभिमानी स्थिति बनाने में मदद मिलेगी.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा को अन्तरमुखी बनने कि प्रैक्टिस होगी.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा को ड्रामा का सारा पार्ट बुद्धि में आ जायेंगा.

- स्वदर्शन चक्र घुमाने से आत्मा व्यर्थ संकल्पों पर क़ाबू पा सकेंगी.

बाबा ने आज सारी मुरली में दो-दो बातों कि स्मृति दिलाकर हमें स्वदर्शन चक्र फिराना सिखाया, उसे ही रिपिट करेंगे जिसे कि हमें भी उसकी प्रैक्टिस होती जाये.

- उत्थान और पतन ---> ये दो बातें हमें याद दिलाती है कि हम सतयुग में कितने उत्तम और पवित्र थे, हम कितने ऊँच थे और कलियुग के अन्त में कितने अपवित्र और नीच बनते हैं. अब पुरुषोत्तम संगमयुग पर फिरसे हम उत्तम और पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते है.

- वाइसलेस और विशश वर्ल्ड ---> सतयुग-त्रेतायुग को पवित्र, ऊँच कहा जाता है उसको कहा जाता है वाईसलेस वर्ल्ड. कल्प के आदि में हम वाईसलेस वर्ल्ड के निवासी थे फिर जन्म लेते-लेते द्वापर से हम विकार में गिरे तो पतित विशश बने. आधाकल्प, द्वापर-कलियुग हम विशश रहे, अब फिर हमको वाईसलेस सतोप्रधान बनना है.

- सतोप्रधान और तमोप्रधान ---> सतयुग के आदि में इस विश्व कि सर्व मनुष्य आत्माये संपूर्ण सतोप्रधान थी तो वायुमण्डल भी संपूर्ण सतोप्रधान था. इस लिए कहा जाता है भारत ही सतोप्रधान राज्य था. सतोप्रधान दुनिया की निशानी यह लक्ष्मी-नारायण हैं, ५ हजार वर्ष

की बात है. अभी कलियुग के अन्त में यह है तमोप्रधान दुनिया. अभी पुरुषार्थ कर वापस सतोप्रधान आत्मा बन सतोप्रधान दुनिया में जाना है.

- उत्तम और कनिष्ठ ---> सतयुग के आदि में भारत बहुत उत्तम था, कलियुग के अन्त में वही भारत कनिष्ठ बना है.

- क्षिरसागर और विषय वैतरणी नदी ---> स्वर्ग में जो देवी-देवताये क्षिरसागर में रहते है, वही फिर कलियुग में विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते है.

- शिवालय और वेश्यालय ---> अभी संगम पर शिवबाबा आकर देवी-देवता धर्म कि स्थापना करते है तो हम भारतवासीओं को उस बेहद के बाप से बेहद का, २१ जन्म स्वर्ग (सतयुग-त्रेता) का वर्षा मिलता है जिसे ही शिवालय कहा जाता है. फिर मध्य से रावण राज्य (माया का राज्य) शुरु होता है तो वही भारत धीरे-धीरे रजो-तमो होते अभी कलियुग के अन्त में पुरा तमोप्रधान, वेश्यालय हो गया है. जिसे ही बाबा फिरसे वापस शिवालय बनाते है. तो सदा याद रहे कि अब हम शिवालय में जा रहे है. यह तो बहुत खुशी कि बात है.

- ज्ञान और भक्ति ---> ज्ञान है दिन और भक्ति को रात कहा जाता है. ज्ञान से देवी-देवताये नेचरल देही-अभिमानी होकर रहते है और फिर वही देह-अभिमानी बनकर भक्ति करते है. अब हम भक्ति से निकल ज्ञान में जा रहे है.

- सच्ची आत्मा और झूठी आत्मा ---> सतयुग में आत्मा संपूर्ण सच्ची होती है तो ज़ेवर यानी शरीर भी सच्चा यानी नेचरल रुप से गोरा होता है. फिर आत्मा में खाद पड़ती गई और कलियुग के अन्त में आत्मा संपूर्ण झूठी बन जाती है तो शरीर भी पतित हो जाता है. अब वापस पुरुषार्थ कर आत्माको योगबल से संपूर्ण सच्चा बनाना ही है.

यह बेहद कि सृष्टि चक्र का ड्रामा अनंतकाल से फिरता ही रहता है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:29-08-14

ज्ञान सागर बाप ने हम बच्चों को आज फिरसे याद कि यात्रा सिखलाते हुए कहा, मीठे बच्चे - चैतन्य अवस्था में रह बाप को याद करना है, सुन्न अवस्था (ध्यान अवस्था) में चले जाना या नींद करना - यह कोई योग नहीं है.

योग का मतलब है कनेक्शन. आत्मा और परमात्मा का मिलन. जैसे कि एक मनुष्य आत्मा दूसरे मनुष्य आत्मा को सामने न होते भी याद करती है तो अगर याद सही है तो सामने वाले को उसकी टचीग जरूर होती है कि उसे कोई याद कर रहा है. वैसे जब हम आत्मा-बच्चे अपने परमात्मा-बाप को याद करते है तो हमारी याद भी ऐसी हो जो बाबा तक पहुँचे. लेकिन परमात्मा कोई देहधारी तो है नहीं, इसलिए उसे याद करने के लिए हमें भी उसी अवस्था में आना पड़े यानी खुद को शरीर न समझके आत्मा समझे, जब हम खुद को आत्मा समझकर बाप को याद करेंगे तो ही हमारी याद बाप को पहुँचेगी और हमारा योग सफल होगा.

लेकिन ज्यादातर हमारे साथ होता क्या है कि जब हम बाबा कि याद में बैठते है तो उस समय हमारा मन दूसरी बातों में जैसे कि काम-काज के या सेवा के या फिर कोई व्यर्थ बातों में चल रहा होता है और बाबा को याद करते वक्त भी वही सब याद आता रहता है. लेकिन हमारे साथ और सब ब्राह्मण आत्माये भी योग करते है तो हमें वायुमण्डल का साथ मिलता है, जिसे हमें शांति का अनुभव होता है और हमारी आंखें बंध हो जाती है और फिर हम नींद में चले जाते है.

बाबा से योग करने कि सही विधि है - सबसे पहले हमें अपने को आत्मिक स्थिति में स्थित करना है यानी हमारे अंदर जाना है या कहे अन्तरमुखी अवस्था बनानी है जिसे हमारे में चल रहे अन्य काम-काजी या व्यर्थ संकल्पों को मिटा सके. इसलिए बापदादा भी जब हमें ड्रिल कराते है तो सबसे पहले कहते है "तुम्हारे सब संकल्प मर्ज कर दो". जब तक हमारा मन व्यर्थ या अन्य सेवा के रिलेटेड संकल्पों से खाली नहीं हुआ है, बाप कि याद में नहीं रह सकेंगे.

हमारा मन इस कलयुगी तमोप्रधान दुनिया में रहते भी शांत हो इसलिए बाबा हमें बार-बार कहते है कि यह पुरानी दुनिया तो अब विनाश होने वाली है इसलिए इस पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्ध और पुराने शरीर से हमारा पुरा वैराग्य हो. उसे याद करने से कोई फायदा नहीं.

एक प्रैक्टिस हम सारे दिन में कर सकते है कि सांसारिक काम-काज करते हुए भी स्वयं के मन को शांत रखने के लिए बार-बार स्वयं को आत्मा समझने या आत्मिक अवस्था में रहने का प्रयास करें. इसके लिए नीचे दिये हुए स्वमान को युज करें. जितना हम आत्मा-अभिमानी बनते जायेंगे उतना हमारा योग भी बाबा के साथ बहुत नेचरल रुप से होगा.

में आत्मा हूं. भृंकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं.

में आत्मा हूं. शांत और पवित्र स्वरूप हूं. शांति और पवित्रता मेरा स्वधर्म हैं.

में आत्मा हूं. सत्य हूं. चैतन्य हूं. आनंद स्वरूप हूं.

में आत्मा हूं. अजड, अमर, अविनाशी हूं.

में आत्मा हूं. चैतन्य शक्ति हूं. ये शरीर जड़ हैं. में चैतन्य शक्ति आत्मा ही शरीर को चला रही हूं.

में आत्मा हूं. शरीर मेरा वस्त्र हैं.

हमारी आत्मिक स्थिति बनने की चैकिंग है कि हम मन-वचन-कर्म से किसको भी दुख नहीं देंगे, क्योंकि हम जानते है हम आत्मा है और वह भी आत्मा है तो अगर हम किसी को भी दुख देंगे तो हमें वह रिटर्न में जरूर मिलेगा. हमारे सामने कोई कैसा भी बर्ताव करें उससे हमें कभी नाराज नहीं होना है और हमारा कर्मों का नया अकाउंट भी अभी नहीं बनाना है.

ॐ शांति.

आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-08-2014

सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर हमें स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले ज्ञान सागर बाप ने आज फिर से हम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनने कि सिख देते हुए कहा, तुम्हें शांतिधाम और सुखधाम दोनों को याद करना पड़े.

हम ब्राह्मणों का लक्ष्य हैं इस ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर स्वर्ग में ऊँच, लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनना. इसके लिए दो मुख्य बातें हैं, एक है पतित-पावन बाप को शांतिधाम में याद करना जिसे की हम आत्माये वापस संपूर्ण सतोप्रधान-पावन आत्माये बन जाये और दूसरा हैं देवी-गुणों को धारण करना जिसे हमारी आत्मा के संस्कार देवी-देवताओं जैसे बन जाये. लेकिन हमारी आत्मा देवी-गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ तब करेंगी जब उसे मालूम हो कि मुझे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है (लक्ष्य हो तो लक्षण भी आते जायेंगे) इसलिए बाबा हमें शांतिधाम के साथ-साथ सुखधाम को भी याद करने को कहते है.

आज मुरली में, बाबा ने जितनी बार हमें अलग-अलग तरीक़े से आत्मा का स्वदर्शन चक्र घुमाना सिखलाया उसे ही फिर से रिपिट करेंगे तो हमारी प्रैक्टिस होती जायेगी.

- रुहानी बाप बच्चों से पूछते हैं अब तुम्हें अपने घर (शांतिधाम) जाना है तो घर को याद करना है. लेकिन क्या घर में जाकर बैठ जाना है? विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं ना. उनका अर्थ भी बाप अब समझाते है. स्व अर्थात आत्मा को दर्शन हुआ, ८४ जन्मो के चक्र का. तो वह चक्र भी फिराना पड़े. तुम जानते हो हम ८४ का चक्र लगाकर घर जायेंगे. फिर वहॉ से आयेंगे सतयुग में पार्ट बजाने. फिर ८४ का चक्र लगायेंगे. तो यह जो विष्णु को चक्र दिया है, यह चक्र है तुम्हारा. तो यहॉ जब बैठते हो तो सिर्फ शांति में नहीं बैठना है. वर्सा भी याद करना है इसलिए यह चक्र है.

- बाप कहते हैं तुम लाइट हाउस भी हो, बोलता चालता लाइट हाउस हो. एक आंख में है शांतिधाम और दूसरी आंख में है सुखधाम. दोनों को याद करना पड़ता है. घर को याद करने से घर में चले जायेंगे फिर चक्र को भी याद करना है.

- बाप कहते हैं यह सारे चक्र की नॉलेज तुमको ही है. ८४ का चक्र लगाया है. अब यह अन्तिम जन्म है मृत्युलोक में. नई दुनिया को कहा जाता है अमरलोक. यहॉ तो बैठे-बैठे अचानक मृत्यु हो जाती है, वहॉ मरने का डर नहीं क्योंकि अमरलोक है. वहॉ तुम बुढे होते हो तो भी ज्ञान है हम गर्भमहल में जाकर प्रवेश करेंगे. अभी जाते है गर्भ जेल में. वहॉ तो गर्भ महल होता है.

- बाप कहते है यह है पाप-आत्माओं कि दुनिया. यहॉ तो आत्मा को दुख ही मिलता है. वह है पुण्य आत्माओं कि दुनिया. वहॉ दुख का नाम-निशान नहीं. तो एक आंख में शांतिधाम और दूसरी आंख में सुखधाम रखो.

- बाप कहते है भले तुम जन्म-जन्मांतर जप-तप आदि करते आये हो परन्तु वह ज्ञान तो नहीं है ना. वह है भक्ति मार्ग. यहॉ यह है ज्ञान मार्ग. यहॉ अकसर करके साक्षात्कार होता है ब्रह्मा का, फिर श्रीकृष्ण का होगा. कहेंगे इस ब्रह्मा के पास जाओ तो तुम कृष्णपुरी वा वैकुण्ठ में चले जायेंगे. लेकिन ऐसा नहीं समझना कि साक्षात्कार हुआ माना सद्गति हो गई. साक्षात्कार तो सिर्फ इशारा दिलाने के लिए होता है, यहां जाओ. अब तुम यहॉ आ गये हो तो वहॉ (सतयुग में) जाने के लिए पुरुषार्थ करना है.

- बाप ने तुम्हें इस विष्णु के अलंकारों का राज भी समझाया है. असूल में यह अलंकार तो तुम ब्राह्मणों के है, परन्तु तुम स्थाई नहीं रहते हो इसलिए देवताओं को दिखाते है. मुख से जब तुम ज्ञान सुनाते हो तो जैसे शंख ध्वनि करते हो. तुम ब्राह्मण ही अभी कमल फूल समान पवित्र जीवन जीते हो. और यह गदा है ५ विकारों रूपी माया को जीतने की. देखो तुम स्वयं को यह अलंकारों से कैसे सजे-सजायें दिखते हो.

- बाप कहते है घर गृहस्थ में रहते बुद्धि में यह हो कि अब हमको जाना है सुखधाम वाया शांतिधाम. यह हमारा बहुत जन्मो के अन्त का जन्म है. ८४ जन्म पूरे हुए. सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी फिर वैश्य, शूद्र वंशी बनें...अब हम बने है ब्राह्मण चोटी. फिर ब्राह्मण से देवता बनेंगे.- यहॉ बैठे है जैसे कि ८४ की बाजोली खेलते है. आगे तीर्थों पर जाते थे तो भी ऐसे

बाजोली करते निशान डालते जाते थे. अभी तुम्हारा तो सच्चा तीर्थ है - शांतिधाम और सुखधाम.

- बाप कहते हैं मैं ५ हजार वर्ष बाद आता हूँ, तुम बच्चों को वर्सा देने. तुम जानते हो हम आये हैं हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस का वर्सा लेने. सतयुग में अथाह धन मिलता है. तुम २१ पीढ़ी देवता बनते हो. वहॉ बुढ़ापे बिगर कभी कोई मरेगा नहीं. यहॉ तो बैठे-बैठे अचानक मर पड़ते हैं. गर्भ में अन्दर भी मर पड़ते हैं. वहॉ तो दुख का नाम नहीं होता. यह है दुखधाम रावण राज्य, उसको कहा जाता है सुखधाम, राम-राज्य. तो याद रहे अब हमें जाना है रावण-राज्य से निकल राम-राज्य में.

ॐ शांति.

आज कि अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:31-08-14

बाबा ने आज सारी मुरली मधुबन निवासी भाईओं-बहिनो के लिए कही है. लेकिन हम बहार वाले भी मधुबन वालो से कम नहीं है. तो हमें बाबा ने कही सर्व बातों का अटैंशन देकर स्वयं में धारण करना है जिसे हमारी स्थिति श्रेष्ठ बने.

बाबा ने कही सर्व बातों को हमारे में चेक करते धारण करते चलेंगे.

- हमारे में वृति की भी मधुरता, वाणी की भी मधुरता और हर कर्म में भी सदा मधुरता हो.

- हमारी आत्मा में इच्छा मात्रम अविधा के संस्कार प्रज्वलित हो जिसे सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को लगे कि हम सदा तृप्त आत्माये है.

- हमें सदा संकल्प, वाणी अथवा कर्म से एक-दो के सहयोगी बनना ही है.

- बाबा हमारे में ऐसा परिवर्तन देखना चाहते है जो दूसरे देखने वाले, सुनने वाले भी परिवर्तन हो जाये. हम औरो के लिए एक श्रेष्ठ एग्जेम्पुल रुप में हो.

- हमारे हर संकल्प पर भी अटैंशन हो, इसमें अलबेलापन न हो.

- हम विशेष आत्माये है तो हमारे सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली आत्माये भी यह महसूस करें की हमारे में कोई विशेषता है.

- हमारा सदा एक लक्ष्य हो कि हमें दाता का बच्चा बन सर्व आत्माओं को देना ही है न कि लेना है. सदा दातापन की भावना रखने से हम सम्पन्न आत्माये बन जायेंगे. दातापन की भावना हमें सदा निर्विघ्न, इच्छा मात्रम अविधा की स्थिति अनुभव करायेगी.

- हमारा लक्ष्य सदा एक बिन्दु की तरफ हो. अन्य कोई बातों को देखते हुए भी नहीं देखें. हमारी नजर सदा एक बिन्दु की तरफ ही हो. कोई भी बातों के विस्तार में न जाकर सार में रहकर बिन्दु रूप स्थिति बनानी है, जिसे हर कर्म में भी फुलस्टोप अर्थात बिन्दु. स्मृति में भी बिन्दु अर्थात बीजरूप स्टेज हो.

- हमारी फ़रिश्ता स्थिति की ऐसी स्टेज हो जिसे हमें साकारी शरीर में भी आकारी रुप अनुभव हो. चलते-फिरते कार्य करते भी दूसरों को हमारा आकारी फ़रिश्ता स्वरूप का अनुभव हो. हम जिस भी स्थान पर जाये हमारा यह फ़रिश्ता रूप ही दिखाई दे.

- हमें स्थूल कोई भी कर्म करते एक ही समय पर कर्म सेवा और मनसा सेवा दोनों सेवा का बैलेन्स रखना है. हमें अभ्यास करना है की कर्म भले बहुत साधारण हो लेकिन हमारी स्थिति ऐसी महान हो जो साधारण काम होते भी साक्षात्कार मूर्त दिखाई दें. कार्य साधारण हो लेकिन स्थिति अति श्रेष्ठ हो.

ॐ शांति.